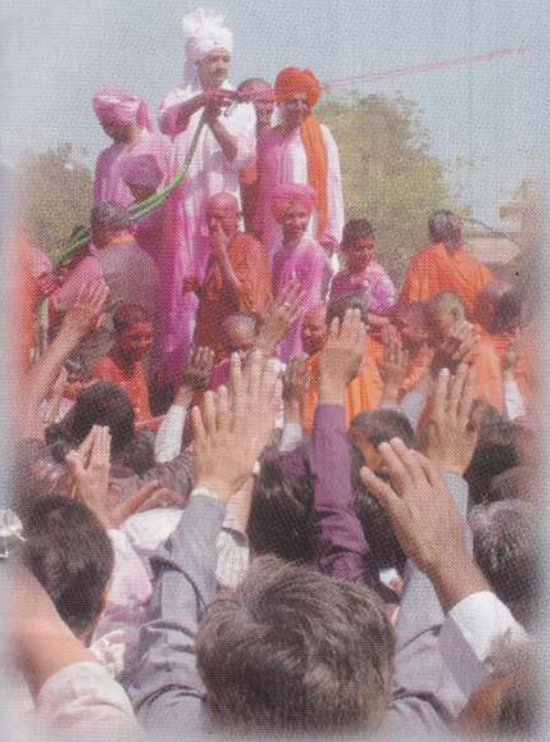
SHREE SWAMINARAYAN

શ્રી સ્વામિનારાયણ

Mar.'2004





વિજયસ્તંભ સ્થાપના
તથા
રંગોત્સવ
તા.૭/૦૪/૨૦૦૪

પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publiser:-Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1





सम्प्रदाय के दोंनो देश के आश्रित आपने इष्टदेव श्री हरि से वर्षो से यह अपेक्षा रखते थे। तस्वीर में प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री के साथ वडताल कें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अपने भावि आचार्य लालजी महाराजश्री वडताल के बाल लालजी अहमदावाद मंदिर के महंतस्वामी पाटोत्सव के यजमान प. भ.समेशकुमार रणछोडभाई मारफतिया।



सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के १८२ वें पाटोत्सव के प्रसंग पर दोंनो देश के हरिभक्त दुर्लभ ऐतिहासिक नरनारायणदेव भगवान के दर्शन का लाभ लिये। उत्तर दक्षिण देश के दोनो पीठाधिपति तथा दुजरात राज्य के राज्यपाल श्री कैलाशपति मिश्रजी पाटोत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुए।



विदेश में रहते हुए हरिभक्तों तो भले ही प्रतिदेन धर्मकुल को दर्शन न होता हो, परंतु लम्बे अर्शे के बाद जब यह सुख प्राप्त होता है तब श्री हरि के अपर स्वरुप को हिंडोले में झुलाकर वह लाभ प्राप्त कर लेते है। नाईरोबी में हरिभक्तो ने सुख प्राप्त किया साथ में सन्त लोग।

ईश्वरपुरा पारायण प्रसंग पर यजमानश्री गलबाभा चौधरी प. पू. महाराजश्री का आशीर्वाद लेते हुए साथ शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा स्वामी देवप्रकाशदासजी।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु.
आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२१३३८३५ (मंदिर)
७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स
०७१-७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ३०१-००
विदेश२००१-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ३ मार्च -२००४

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रूपरेखा एवं भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रूपरेखा	३
३.	सच्चा सुख सत्संग के अपनापन में है	५
४.	पांच महाव्रत	७
५.	हालार के योगेश्वर स्नेह मूर्ति सच्चिदानंद स्वामी	८
६.	षष्टि पूर्ति महोत्सव क पूर्व संध्या पर	१०
७.	नाम स्मरण महिमा	१२
८.	परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीकी दिव्य वाणी	१४
९.	युवाचार्य प. पू. लालजी महाराज श्री के मुख की अमृतवाणी	१५
१०.	हे महाराज ? आप भगवान है (मान कुवा के नाथासुथार)	१६
११.	वह इष्टदेव हमारा है	१७
१२.	बाल वाटिका (१) आधी रात में अभिमान गया (२) यह भी संसार हो जायेगा -	१८
	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २१३२१७०, २१३६८१८. फेक्स : २१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com

अ स्म दी य म्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

विश्व के महान कवि कुलगुरु श्री कालिदासने अपनी श्रेष्ठ कृतियों में कहा है कि "उत्सव प्रियाः हि मानवाः" मनुष्य मात्र को उत्सव प्रिय है । इसी लिये सर्वत्र बडे बडे उत्सवों का सुन्दर वर्णन मिल जाता है । उस सेभी आगे बढकर भगवान स्वामिनारायणने तो उत्सव को मोक्ष का मार्ग बताया है । बडे-बडे उत्सवों में हजारों लाखों की मानव मेदनी भरती है, ऐसे उत्सव में कोई ऐसाभी जीव हो जिसे अन्त समय में ऐसे उत्सव या सत्संग या भगवान का स्वस्म स्मरण हो जाय तो निश्चित ही उस जीवका आत्मन्तिक कल्याण हो जायेगा । धर्म भक्ति वाले ऐसे उत्सव में जो भी कोई आता है उसका अवश्य कल्याण होता है । ऐसे कल्याणकारी उत्सवों की परंपरा में मुल स्वामिनारायण सम्प्रदाय में एक अनोखी परिपारी चली आ रही है । उसी का अनुसरण करते हुए षष्टि पूर्ति महोत्सव परमपूज्य आचार्य महाराजश्री के साठ वर्ष पूर्ण होने पर जन्म जयन्ती मनाने की पूर्ण सन्ध्या पर श्रीजी महाराज के सिद्धान्तों को साकार करने के लिए अहमदावाद के आंगन में अदभुत मानव जनमेदिनी उमड पडेगी । उसमें हमभी कहीं साम्मिलीत होकर जगलियन्ता जगदीश्वर भगवान श्री स्वामिनारायण के प्रत्यक्ष दर्शन से वंचित न रहजाय इसका ध्यान रखकर सावधानी पूर्वक इस उत्सव में भाग लें यही मनुष्य जन्म की सार्थकता है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

मई - २००४

६. केन्या (आफ्रिका) से धर्म प्रचार प्रवास पूर्ण करके अहमदावाद पधारे ।
८. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । प.भ. योगेश प्रभुदास सोनी के यहाँ पदार्पण नवरंगपुरा । प.भ. सुरेशभाई सोनी के यहाँ पदार्पण पालडी । श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा शाकोत्सव पर पदार्पण ।
९. श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१०. प. भ. माधवलाल मगनदास पटेल के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, राणीप ।
११. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । एस. वी. झवेरी ज्वेलर्स के उदघाटन प्रसंग पर पदार्पण वस्त्रापुर ।
१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर भेवडा (मूलीदेश) ता. ध्रांगध्रा मूर्ति प्रतिष्ठा में पदार्पण ।
१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर नाना अंकेवाडिया (मूलीदेश) सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण ।
१५. प. भ. सतीषभाई शेठ के यहाँ भागवत पारायण प्रसंग पर पदार्पण ईशनपुर । गोल्ड माइन स्टोक्स प्रा. ली. में पदार्पण मणीनगर प.भ. विष्णुभाई केशवभाई पटेल के यहाँ पदार्पण (लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु, गांधीनगर)
१६. प. भ. राजूभाई पटेल गजेरा के यहाँ पदार्पण बापुनगर ।
१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर नटवरगढ (मूलीदेश ता. लींबडी) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
१९. खेरवा (पंचमहाल) प.भ. विनयचंद भगवानदास पटेल के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
२१-२२. चराडवा (मूलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर सुवर्णकलश महोत्सव तथा पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद हाथों से करते हुए ।
२३. सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का १८२ वां पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद हाथों से करते हुए । प.भ. सोमाभाई त्रिभोवनदास पटेल (मोखासणवाला) के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद हेतु पादार्पण - कलोल हाइवे ।
२४. प. भ. रमणलाल कचरदास पटेल (यु.एस.ए.) के यहाँ सत्कार समारंभ में आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, राणीप ।
२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा (ता.इडर) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२६. बदपुरा (माणसा) श्री स्वामिनारायण मंदिर रजत जयंती महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२७. खाग (राजस्थान) मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर भाणपुर (विजापुर) पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
२९. श्री सहजानंद गुरुकुल असारवा में पदार्पण । श्री सहजानंद संस्कार धाम विसनगर पदार्पण ।



भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रूपरेखा

मई - २००४

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटणी (मूलीदेश) पाटोत्सव के अवशर पर पदार्पण । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल नगरयात्रा अवसर पर पदार्पण बालासिनोर ।
२. इश्वपुरा गाँव में सुबह शाम को पदार्पण और सत्संग सभा ।
३. बीलीया श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव पर पदार्पण ।
४. मोखासण श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव पर पदार्पण । श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (श्रीनगर) पाटोत्सव पर पदार्पण ।

५. प. भ. नवीनभाई जेठाभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण, मणीनगर ।
६. प. भ. प्रविणभाई प्रहलादभाई की दुकान के उद्घाटन पर पदार्पण, घाटलोडिया ।
८. मोरबी सत्संग सभा के अवसर पर पदार्पण ।
९. रामनगर (कलोल) गाँव में सत्संग सभा में पदार्पण ।
१०. लुणावाला (पंचमहाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव पर पदार्पण ।
११. श्री स्वामिनारायण मंदिर, इटादरा (माणसा) पदार्पण ।
१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर, धोलका सत्संग सभा में पदार्पण ।
१३-१४.शेखपाट - जाईवा - गढडीया - आदि (हालार मूलीदेश) गाँवो में पदार्पण ।
१५. श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित नगर यात्रा में पदार्पण ।
१६. चराडवा मंदिर में सुवर्ण कलश महोत्सव के अवसर पर पारायण, प्रारंभ पूजन में पदार्पण ।
२०. प. भ. रघुभाई प्रेमचंदभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण, घाटलोडिया
२१. प. भा. विकेनभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, सेटेलाईट
२२. अहमदावाद मंदिर में होमात्मक महापूजा के अवसर पर पदार्पण ।
ऊंझा गाँव में नरनारायणदेव युवक मंडल नगरयात्रा के अवसर पर पदार्पण
२३. सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव - अभिषेक कर कमलो से किया ।
२४. प. भ. सोमाभाई त्रिभोवनदास पटेल और प. भ. डॉ. कौशिककुमार कांतिलाल के यहाँ शादी के अवसर पर पदार्पण।
२५. कांकरिया बाल स्वस्थ कष्टभंजनदेव के पाटोत्सव पर पदार्पण राणीप मंदिर पाटोत्सव पर पदार्पण
२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर प्राथमिक शाला (स्कुल) में इनाम वितरण में पदार्पण
२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर बदपुरा पाटोत्सव में पदार्पण
२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर गुलाबपुरा सत्संग सभा में पदार्पण
२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा महापूजा की पूर्णाहुति में

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के विषय में जो नियमानुसार प्रति वर्ष फरवरी महिने की अंतिम तारीख के बाद प्रकाशित होनेवाला प्रथम अंक में स्पष्ट किया जा रहा है ।

१.	प्रकाशन स्थल	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१
२.	प्रकाश समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	स. गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
	राष्ट्रीयता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
४.	संपादक का नाम	:	स. गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
	राष्ट्रीयता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८
	राष्ट्रीयता	:	श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
			हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१

मै शा. स्वा. निर्गुणदासजी यह स्पष्ट कर सहा हूं कि उपर दी गई बाचे मेरी जानकारी और समाझ के अनुसार सत्य है ।

साईन : शा.स्वा. निर्गुणदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, (प्रकाशक की साईन)

सच्चा सुख सत्संग के अधीन है (वच. लोया-३)

- पटेल गांडाभाई मोहनलाल (कोल्हापुर)

माहात्म्य ज्ञान से युक्त जिसे भगवान तथा संतो में निश्चय है वह भगवान तथा सन्तो के काम में कभी भी लगने के लिये तैयार हो जाता है। उस भक्त का जीवन इसी हेतु से है। सन्त के वचन में परिवर्तन नही होने देता बल्कि वे जो कहे वही करने को तैयार रहता है। इसी विषय पर एक बात श्री जी महाराज की है। उनका स्वभाव ऐसा था कि गोदोहन मात्र एक स्थान पर रहने का नियम लिये थे। ऐसे वे त्यागी थे। परंतु लोज आने के बाद श्री रामानंद स्वामी पर विशेष प्रेम हो गया। रामानन्द स्वामी ने कहा सत्संग में रहना हो तो खम्भे को पकड कर रहना पडेगा। इस वचन को स्वीकार किया और लोजपुर के आश्रम में श्री मुक्तानंद स्वामी की आज्ञा में रहे। तथा उनकी सेवा तन मन से किये। इसका कारण एक मात्र रामानंद स्वामी में निश्चय। उनके वचन में रहना ही एक निष्ठा थी। परिणाम स्वरूप सदगुरुरामानन्द स्वामी के प्रेम पात्र बने। जिस कारण सम्पूर्ण सत्संग हमारे ऊपर सौपकर चले गये।

जिसे भगवान में पक्का निश्चय हो गया हो वे परिवार त्यागने में थोडा भी विचार नही करते है। स्त्री-पुरुष राजा-रंक कोई भी हो जिसे भगवान में प्रीति होगयी है वे सर्वस्व त्यागकर भगवान एवं सन्तो के कार्य में लगजाते हैं।

बहुत सारे उदाहरण मिलते है :-

गांव डडुसर के राजपूत गलूजी एकांतिक भक्त थे, उन्हे भगवान तथा सत्सग्ग में परिपक्व निश्चय हो गया था। एकबार श्रीजी महाराज डडुसर आये। सभी भक्त श्रीजी महाराज तथा सन्त को घर ले आये और भोजन कराये। इसी समय गलुजी की माता देह त्याग कर दी।परंतु श्रीजी महाराज आये है उनकी सेवा का अवसर पुनः मिले या न मिले इस भाव से विना किसी को बताये माद्या के शवको बरंडा में रखकर श्रीजी महाराज की सेवा आनन्द मन से करके तृप्त हो गये। महाराज को छोडने गांव के बाहर तक गये तो महाराज ने कहा कि गलूजी ? अब आप जाइये अपनी माता की अंतिम विधि कीजिए। आप तो सूतक में भोजन कराये और पूजा किये।

तब गलूजी नें बडी नम्रता से कहा कि हे महाराज ?

मनुष्य अशुद्ध हो सोना का स्पर्श करके तो शुद्ध हो जाता है। जब सोना पवित्र करता हो तो आप परमात्मा है। आपके दर्शन स्मरण मात्र से ही पवित्र हो गये हैं, तो सूतक भी नहीं लगेगा। मोह देह का है उसे सूतक लगता है। जब परमात्मा के दर्शन का लाभ मिलता है तब ब्रह्मभाव होकर सम्बन्ध को भूल जाना चाहिए। यही भाव है प्रभु हमारा बना रहे, सत्संग में दिव्य बुद्धिबनी रहे यही आप से मांगता हूं। यही देते रहेंगे।

ऐसी श्रीजी की परमभक्ता धरमपुर की कुशल कुंवरबाई रानी थी। राजकुमार छोटे थे जिससे राज्य कार्य भार खुद देखती थी। धर्म में अधिक स्त्री थी। परिणाम स्वरूप उनका चैतन्यानन्द स्वामी के साथ समागम हो गया। स्वामी धरमपुर में रहकर सत्संग कराते, श्रीजी महाराज की लीला वर्णन करते। वहां पर उनका खूब सन्मान होता।

एक समय श्रीजी महाराज चौतन्यानन्द स्वामी को गढपुर लेजाने के लिए मुक्तानन्द स्वामी को धरमपुर भेंजे। उस समय कुशल कुंवर बां ने कहा कि अपने गुरु को हम जाने नही देंगे।परंतु श्रीजी महाराज यहां आवें तो गुरु को जाने देंगे। मुक्तानन्द स्वामी गढपुर आये और रानी का पत्र श्रीजी महाराज को दिए। बाद में श्रीजी महाराज पू. परमहंसो को साथ में लेकर वसंतपंचमी के दिन धरमपुर आये और बडा उत्सव किये। वहाँ के लोगो को दिव्यदर्शन दिए। रानी ने अपना राज्य चरण में अर्पित कर दी। श्रीजी महाराजने कहा कि हम यहाँ राज्य करने नहीं आये हैं। राज्य आपकरो और अन्दर में हमारी मूर्तिका

ध्यान करते रहना । श्रीजी महाराज के दर्शन मात्र से हृदय में मूर्ति उतर गयी और भव पार हो गयीं । इस प्रकार निश्चय प्रेम श्रद्धा होतो भगवान घर आयेगे ।

अगतराई गाँव के पर्वत भाई पटेल ऐसे अनासक्त भक्त थे कि जीवन में उपासना तथा निश्चय को दृढता से पकड कररखेथे ।सामान्य लोग भी उन्हे जानते थे । रामानन्द स्वामीने ही परमात्मा के स्प में निश्चय कराया था जिससे परिपक्वता दृढ भक्ति की हो गयी ।

एक समय पर्वतभाई खेत में काम करते हुए मानसी पूजा कर रहे थे । श्रीजी महाराज का ध्यान करके दही रोटी का भोग लगा रहे थे । साथ में एक साथी को ऐसा लगा कि पर्वतभाई सो रहे है इसलिये मिट्टी का ढेला मारे तो दही तथा रोटी दोनो जमीन पर गिर गया । साथी को बडा पश्चाताप हुआ और माफी मांगी । पर्वतभाई की श्रीजी महाराज पर इतना अधिक विश्वास था कि खेती में जो भी पैदा हुआ था सभी लेकर गढडा पहुंच गये । उस समय श्रीजी महाराज ने पूछा कि बालको के लिये कुछ रखे हो कि नही तब पर्वतभाई ने सरलता से कहा कि कणबी तथा मूर्गा दोनो एक समान होते है कहीं से भी दाना विनकर खाले ते है । लेकिन हमारी मेहनत का आपकी सेवा में आवे यही सद्भाग्य है ।

श्रीजी महाराज एकबार गन्ना में से बनाई हुई सभी वस्तुओ को नहीं खाने का प्रकरण चलाये संत लोग इसका पालन भी किये । उस समय श्रीजी महाराजने पर्वतभाई को गन्ने का प्रसाद दिया । पर्वतभाई ने खाने के लिए नही कर दिया । क्योंकि हमारे संत जब नहीं खाते तब हम कैसे खायेंगे तो महाराज नें संतो को गन्ना खिलाया बाद में पर्वतभाई नें खाया । ऐसा निश्चयका भाव था ।

एकबार गोपालानन्द स्वामी संतो के साथ अगत राई गये हुए थे उस समय पर्वतभाई का पुत्र मेघजी यात्रा करने की तैयारी कर रहे थे । उस समय पर्वतभाई ने कहा कि ये स्वामी ही प्रत्यक्षतीर्थ है । इन्ही का सत्संग करो । लेकिन नही माना और तीर्थयात्रा में चला गया । वहाँ अडसठ तीर्थो का टोला दिखाई दिया तो उसने पूछा आपलोग कौन है ? हमलोग भारत खंड के अडसठ तीर्थ है । इस गाव में सद गु.स्वा. गोपालानन्दजी आये हुए है । उन्ही के चरणो में हम सत्संग करके धन्य बनेगे । यह सुनकर मेघजी वापस आया और सत्संग करके धन्य हो गया ।

ऐसा ही उदाहरण दादा खाचर की पुत्री राजबाई का है । माता पिता सत्संगी थे । बाल्यावस्था से ही श्रीजी में भक्ति थी । जिससे विवाह करना नही चाहती थी । श्रीजी महाराज ने कहा कि लोक मर्यादानुसार विवाह करना चाहिए । यदि तुम्हारी भावना सही होगी तो भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे । आपका ब्रत अखंडित रहेगा ।

इस प्रकार श्रीजी महाराज की आज्ञा से हा कर दी और विवाह कर ली । चुनरी आयी । परंतु राजबाई के सामने ही जल गयी । लग्न हो गयी और ससुराल गयी पहली रात में ही पति को सिंहनी जैसी दिखाई दी । राजबाई को ससुराल से मायके भेंज दिया गया । वहाँ से गढडा श्रीजी महाराज की सेवामें भेंज दिया गया । यावत जीवन शरीर को कृश करके सांरव्ययोगी बनकर रही । पुस्त्रमात्र से वीस हाथ दूर रहती थी । यदि कोई गर्भवती स्त्री हो उन्हे यह पता चलजाता कि उसके पेट में बालक है तो उसे दूर रहने को कहती । इस प्रकार मृत्यु पर्यन्त पुस्त्र के स्पर्श से दूर रहीं । उन्होने लाश को भी स्पर्श से दूर रखने को कहा था । मृत्यु के बाद लाश को अग्नि देव भी जला नही पाये तो गोपालानन्द स्वामी नें अग्निदेव की प्रार्थना की और अग्नि दाह हुआ । इस प्रकार सत्यनिष्ठा के कारण ही श्रीजी महाराजने जीवनपर्यन्त उनके सत को बचायेरखा ।

इस प्रकार जिसे भी भगवान तथा भगवान के अपर स्वस्म तथा सन्तो में निश्चय हो जाय तो उस का बेडा पार हो जायेगा । ऐसे अनेको उदाहरण दिखाई देते है । इसी से अपना सत्संग दृढ तथा पुष्ट है । यही सत्य है और अपना सगापन सत्संग का सुख दायक है । यह बात सत्संग द्वारा प्रतीत होती है । और ऐसा ही सदा वना रहे तथा उसे हम सजोकर रखें जिससे अपने सत्संग का फैलाव होसके ।

पांच महाव्रत (पंच वर्तमान)
(सभी सत्संगियों के लिए)

नव प्रस्थापित स्वामिनारायण संप्रदाय के समुचित विकास और वृद्धि के लिए स्वंय श्रीजी महाराज एवं श्रीहरि केअनेक परमहंसो ने अविरत निजी परीक्षण के उपरान्त उपयुक्त अनुयायिओं का चयन किया । संत एवं हरिभक्तों के विशाल समुदाय में अर्हता, पवित्रता, शुद्धि और अन्य उच्चतम निजी सद्‌गुणों के विकास के लिए श्रीहरिने कुछ और नियम स्थापित किये । सत्संगियों के नैतिक जीवन की उन्नति के लिए ये पाँच महाव्रत - पंच वर्तमान - श्रीहरिने स्वयं निश्चित किये हैं । पंच वर्तमान सभी सत्संगियों के लिए अनिवार्य है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं उनके संतों के द्वारा सत्संग दीक्षा प्राप्त करनेके साथ प्रत्येक सत्संगीको अनिवार्यरुपेण इन पंच वर्तमान का पालन करना होता है ।

[1] श्रीहरिने अपने सभी सत्संगियों के लिए मांसाहार पूर्णतः वर्जित है । किसी भी अवस्थामें और किसी भी स्वमें सामिष पदार्थ सर्वथा त्याज्य है । देवी-देवता के प्रसाद स्वमें भी ग्राह्य नहीं । औषध, उपचार या जीवन रक्षक के स्वमें भी मांस संपूर्णः निषिद्ध है ।

[2] स्वामिनारायण संप्रदाय के सत्संगी के लिए शराब, सुरा, मद्य या किसी भी प्रकार के नशाकारी द्रव्य ग्रहण करना वर्जित है । पीडाशामक के स्वमें, औषध प्रयोगमें या जीवन रक्षक उपचार स्वम में भी नशाकारी द्रव्य सर्वथा त्याज्य है । धुम्रपान तंबाकू, भँग, अफीम, इत्यादि नशाकारी द्रव्य कोई भी सत्संगी किसी भी अवस्था में ग्रहण नहीं करेगा ।

[3] अनुचित व्यक्तिसे या अनुचित साधन द्वारा भोजन या पेय पदार्थ पाना सत्संगी के लिए वर्जित है । प्रत्येक सत्संगीके लिए आवश्यक है कि वह संयोग, व्यक्ति और साधन की उपादेयता का समुचित परीक्षण करने के पश्चात् ही भोज्य पदार्थ या पेय ग्रहण करे । अस्वच्छ या अशुद्ध व्यक्ति, ठेले, नाश्ताघर या ऐसे किसी भोजनगृह द्वारा वितरित किये गये प्रदूषित एवं अग्राह्य खाद्यपदार्थ ग्रहण न करें । नाश्ताघर एवं होटल का खाना सत्संगी के लिए पूर्णतः वर्जित है । प्रदूषण निवारण एवं स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु यह नियम अनिवार्य है ।

[4] व्यभिचार महापाप है । प्रत्येक सत्संगी के लिए परम आवश्यक है कि वह किसी भी अवस्था में किसी भी महिला के प्रति विषय लोलुपता से दृष्टिपात न करें । युवा कन्या और महिला के संग निकटता स्थापित करना सत्संगी के लिए वर्जित है । अंतरंग पारिवारिक संबंध (सगोत्र) न हो ऐसी स्थिति में निकटता स्थापित करना वर्जित है । वयस्क पुत्री, भगिनी या माता के संग एकांतवास करना सत्संगी के लिए वर्जित है ।

[5] श्री स्वामिनारायण भगवान का अनुयायी चौर्य कर्म नहीं करेगा । चोरी, लूट जैसे नीच कर्म सत्संगी के लिए वर्ज्य है । देव पूजा के द्रव्य स्वस्य पुष्प-पत्र इत्यादि भी मालिक की पूर्वानुमति के बिना न चुनें । जीवन रक्षा हेतु भी चोरी, लूट, हिंसा न करें ।

ये पंच वर्तमान का पालन सत्संगी के लिए अनिवार्य है । छः वर्ष से अधिक उम्र के बच्चों से लेकर सभी आबाल-वृद्ध स्त्री पुस्त्रों को पंच वर्तमान का पालन करना है । छः वर्ष से कम उम्र के बच्चे, ऋग्ण और अतिवृद्ध सत्संगी समय-संयोग के अधीन विषम काल की स्थिति में मर्यादित छूटपा सकते हैं ।

पंच वर्तमान का पालन करनेवाला सत्संगी आजीवन सुखपूर्वक रहता है और क्षणभंगुर जीवन के उपरान्त परमधाम का महासुख प्राप्त करता है । पंचवर्तमान के पालन से श्रीहरि की प्रसन्नता के साथ अक्षरधाम का महासुख प्राप्त होता है ।

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के सभी निष्ठावान और प्रतिबद्ध सत्संगी दृढतापूर्वक पंचवर्तमान का पालन करें । पंचवर्तमान के पालन से स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा, समृद्धि और प्रबल निश्चयशक्ति प्राप्त होती है । पंचवर्तमान ही भगवान स्वामिनारायण के महाधाम का पथ है ।

हालार के योगेश्वर स्नेह मूर्ति सच्चिदानंद स्वामी

प्रतिनिधि - नरशी के. मारवी (सूरत नीरागढ)

मुनि कहे सुनो महीपति,
पामी प्रसंग सांभर्यु एह
स्वामी सच्चिदानन्दजी,
तेनो संक्षेपे वर्णवुं स्नेह ।
चौपाई - देश हालार मां मोडागाम,
दरबार माराभाइ नाम ।
रामानन्द स्वामी ना प्रतापे,
महा सामर्थी पामेल आपे ।
साधुथावा महाप्रभुपास,
घरमेल्यु छे थइ उदास ।

हालार प्रदेश में नव-नव योगेश्वर हो गये है । स. गु. भूमानन्द स्वा. स. गु. निष्कुलानन्द स्वा. स. गु. गुणातीतानन्द स्वा. स. गु. भूमानन्द स्वा, स. गु. निष्कुलानन्द स्वा, स. गु. गुणातीतानन्द स्वा, स. गु. गोविन्दानंन्द स्वा, स. गु. शिवानंद स्वा, स. गु. अक्षरानंद स्वा, ए सभी एक से बढकर एक हुए है । महाप्रभु भगवान स्वामिनारायण के साथ अजोड स्नेह था । भगवान के स्नेहपात्र सच्चिदानंन्द स्वामी पूर्वाश्रम के दरबार मोटा भाई थे । साधु होने की इच्छा से घरबार छोडकर निकल पडे।

हंसराज पटेल को इसप्रकार कहा-

चौपाई-
तमे कहेशो ते करीश काम,
नथी लेवा मजूरीना दाम,
दाल रोटलो आपजो दाडी
हंसराजे राजीपे हा पाडी
पेटिया तरीके रह्या आम
थया घरना राजी तमाम
जाण्यु भूख्या आव्या हशे वाट
रांधी रसोई बधाना मांट

हंसराजभाई के घरवालो ने विचार किया कि-

पहले इन्हे भोजन करा दे बाद में शान्ति से हम लोग करेंगे ।

चोपाई-
पाम्यो परचो पेली राते,
हतुं एटलुं खुटाडी दीधु ।
छास सुधा वध्यु नही बाकी
घरना बधा बेठाता टाकी ।

सभी ऐसा विचार किये कि यह तो बडा पेटू है । यह हम लोगों से रखा नहीं जा सकेगा । तब मोटाभाई ने बोला-

चौपाई-
तेम साथे ठराव्यु तुं आवुं,
ज्यारे रजा आपो त्यारे जावुं
त्यारे रजा आपी हंस राजे,
कहे सुखेथी सिधावो आजे ॥

वहाँ से स्वामीजी निकल गये गढपुर आये महाराज । मोटी बा को कह रखे थे कि भूखे को भोजन कराने से अधिक दूसरा कोई पुण्य नही है । इस लिये मोटा बा मोटाभाई को बनाकर खिलाने लगी २० रोटी खा गये तब मोटी बा क्रोध में कहने सलगी

चोपाई-
बोल्या रोटला घडता त्यांथी
पीप्यो काल आव्यो क्यांथी
सुणीबाई बोल्या थई राजी
थाक्या हो तो राखो हवे मांजी
सांजे वेलाये वालु कराशे
ऐवुं कही गया प्रभु पासे
आपी पूडी प्रसादीनी ज्यारे
थया तृप्त मोटाभाई त्यारे ।

एकबार सभा में सभी लोग मंत्र मुग्ध हो कर कथा सुन रहे थे तब प्रसंग वश दुर्वाशा को उपवासी कहा गया उस विषय पर जीवा खाचर ने महाराज से चर्चा किया ।

चौपाई-
एवो मानिये अमे,
प्रभु कहे कहे शुं कोई समे
एम कही ने विस्वरी वात,
वीती गया तेने दिन स्वत ।

इस प्रकार कुछ समय वीत गया जीवा बापु को हुआ कि महाराज को दो दिन तक उत्तम भोजन कराउं ऐसा विचार कर महाराज के पास आये और निवेदन किये-

चौपाई-
जीवाबापुनो जीव उदार,
एमा कभी न होय लगार ।
तोय आग्रह कर्यो उमंगे,
मेल्या सच्चिदानन्दने संगे ।

महाराज ने बापू से कहा थोडा टिंमण इन्हे भी देना तो बापू ने कहा

चौपाई-
बापू कहे कहेवा पण नोध,
हजी भूख्यो गयो नथी कोई ।
बेय ओरडा उघाड्या ज्यांय,
भरचक भरेला मिठाई ॥

दरवाजा खोला तो मिठाईयों से सभी बर्तन भरे थे । जीवा बापू ने कहा- प्रभु के पास तो दुर्वाशा का

यह द्वितिय स्प है-

नथी वात साधारण एह,
केम पेटमां समाय तेह ।
पोते जम्या प्रभु ने संभारी,
शिष्य प्रीतनी रीत छे न्यारी ॥

एकबार सुरा बापू गढडा आये तो स्वामी माणकी के लिए घास लाये थे सभी घोडा को डाल दिये इस पर उन्होनें कहा -

चौपाई-

सच्चिदानन्द आकडाभाई,
बोल्या बापूने टुंकारो दई ।
घासलाव्यो तो माणकी काजे,
तारी माने शुं नीरशुं आजे ।

सुरा भक्ति के विरह में महाराज को रिझाते हुए कहते है

चौपाई-

अवा समे त्यां बन्यो बनाव,
जीवाबापू ने आव्यो ते ताव ।
तेने दर्शन देवाने काज,
संतो साथे गया महाराज ॥

जब महाराज वहाँ वापस आये तब स्वामी के शिष्यो के मन में हुआ कि -

चौपाई-

ऐने अन्तरे उठ्यो तो घाट जाय
मोटा ने रिझावा माट ।
मारा गुरु विरहेरीबाय, तेन जोवा
कोई न जाय ।
घाट जानी लीधो महाराजे, कह्यु
उंचे आवाजे ।
साधुराम उतावला चालो, जई
स्वामी ने खबर आलो ।

महाराज आ रहे है सभी को आनंद हो गया । जब महाराज के आने की खबर स्वामीने सुनी तो बेखबर हो गये । सुराबापू कहने लगे-

चौपाई-

सुराबापूने बोला सभामां,
भान राखे नहि बोलवामां ।
पछी स्प्रे छे रातने दिन,
एवुं सुनी खीजवा भगवान ॥"

महाराज ने कहा आपको प्रसन्न करने के लिए स्वामी में कमी निकाली बाद में स्वामीजी अतिस्नेह से सुराबापु को गले लगा लिया । स्वामी महाराज के लिए ही भंटा तैयार करते-

चौपाई-

रींगण की जया गासडी बांधी,
थई स्वामीने स्नेह समाधी ।
स्नेह नो महिमा छे महान,
थयो संकल्प मूर्तिमान ।
जल हिमथी जामे छे जेम, थयो
साकार संकल्प तेम । मांथे गासडी
लई सिधाव्या,
मोडु मानी उतावळो आव्या ।

एकबार स्त्रियों की सभा में स्वामीजी चले गये और सांख्ययोगी बहनोने महाराजको शिकायत की तो महाराज मंद-मंद मुस्कान के साथ कहने लगे

चौपाई-

सच्चिदानन्दजी संत जे छे,
राधावाडिये जे सेवा करे छे ।
एनो संकल्प साकार आजे,
अव्यो रींगणा आपवा आजे ॥
दिव्यभावनी दृष्टिए जोइ,
उपवास करशात कोई ।
भूत, भविष्य भाखनारा,
कोटि कवि शेष करे विचार ।
थाय संकल्प साकार एतो,
महाप्रभुनो प्रताप एतो ।

एक समय गन्ने के खेत में शियार काफी नुकशान किये तो स्वामीने ,सभीको समाधि में लगा दिया । फिर वे कभी नहीं आये । एकबार हरिभक्तो ने महाराज से कहा पानी न बरसने से पशु प्राणी सभी को तकलीफ हो रही है-

चौपाई-

कृपा करी करो वरसाद,
बोल्या श्री हरि गंभीर साद ।
माथा फूट मूकी दियो आम,
एतो इन्द्रनी सत्ता तमाम ॥

महाराज की इच्छा बिना बरसात नहीं हो सकती गोपालानन्द स्वामी ने स्पष्ट कहा-

चौपाई-

तमे धारो तो अवस्य थाय,
सुनी स्वामी बोल्या नहीं काई ।

सहुं उठ्या उदासीमांथी । आटां उरवाण्या पाघडी मांथी । सभी दु:खी हो गये और सच्चिदानन्द स्वामी से कहे बाद में गोपालानन्द स्वामी को साथ में लेकर महाराज के यहा गये-

चौपाई-

नोय प्रभुनी इच्छा जराय,
केवी रीते आमांथी कराय ।
वण्या निराश थईने अमे,
त्यांतो मल्या छो दयालुं तमे ।

संतो को था कि महाराज प्रसन्न हो जाये-

चौपाई-

सुराबापूने मेली छे पोक,
स्वामी बोल्या निवारवा शोक ।
वरसाद तो हुं वरसावुं,
पण प्रभुना गुनामां आवुं ।
सुराबापु बोल्या बलमांई
एनी चिंता न करशो जराई ।

प्रभु खीजाशे जो तमे माथे,
तो अपराध लईशु हुं माथे ।

सभी ने एक सुर में कहा कि महाराज प्रसन्न होंगे- सुन्दर फसल होगी तो महाराजकी प्रसन्नता अपने आप आयेगी ।

चौपाई-

शिष्य सांभणी जे स्नेह साथे,
सुराबापूए लींधु छे मांथे ।
मेल्या उतारे सरवेजन,
पछी स्वामी ए विचार्युं मन ।
परपीडा न थई सहन,
आवरण रहित छे तन ।
इन्द्र लोके उतावडा जई
कह्युं इन्द्रने आ कष्ट थई ॥

इन्द्र घबडाकर बरसात करवाये और चारो तरफ पानी ही पानी ।

चौपाई-

त्यारे मेघना आव्या आनंदे,
मार्या ठेकडा मुकुंदानंदे पुछ्य
प्रभुए शेनो आवाज,
कहे मेघ गाजे महाराज ।
तमे दया करी छे महाराज,
कर्यो दुकाल में सुकाल ।
एवुं कह्युं जया उमंगमांथी,
उठ्या प्रभुजी पलंगमांथी ।

महाराजने कहा कि मेरी आज्ञा के बिना यह बरसात कैसे हुई । स्वामी घबडा गये और छिपकर बैठ गये ।

चौपाई-

हरण सहु जन लोक,
वाध्यो सच्चिदानन्दजीने शोक ।
भगवाने भ्रकुटी चढावी,
गृही त्यागीनी सभा बोलावी ।
मुनी बंडा में से बोलावी,
वालो बहु बढ्या रीशलावी ।
सच्चिदानंद गया रोई,
रोमे रोममां टपक्युं लोही ।

कोई उत्तर दे नहीं पाया तब सुरा खाचरने कहा महाराज ? स्वामी ने हम सभी के निवेदन पर प्रेमाधीन हो कर वरसात कराये इनका कोई दोष नहीं-

चौपाई-

एवी रीते विनंती करीने,
हळवेथी हसाव्या हरिने,
स्नेह करी स्वामी ने बोलाव्या,
त्यारे रोमे रोम सधिर समाव्या

इस प्रकार स्वामी को महाराज में अपार प्रेम था । इस प्रकार के संत हालार की भूमि पर हुए है । आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजसे लेकर आजतक के आचार्य में अपार प्रेम बना हुआ है ।

जीरागढ (हालार) रजत ज्यंती उत्सव में पू.आचार्य महाराश्रीने अपने हृदयके उद्‌गार को प्रकट किये थे ।

स.गु. वैराग्यमूर्ति निष्कुलानंद स्वामी ने लिखा है-

चौपाई-

हवे भक्ति हालारना,
वही कहु कच्छ समेत शुद्ध
मनेजे सांभडे तेने थाय हरिमां हेत,
मीठा बोलाने मोमबत्ती,

हैये हेत अपरंपार प्रीत प्रगट प्रभु शु करु तेना नाम उच्चार ।

षष्टि पूर्ति महोत्सव के पूर्व संध्या पर

अतुलभानु भाई पोथीवाला (न्युजर्सी)

जिसके संकल्प मात्र से संसार की उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय होती है । वहीं भगवान कहते है कि हमे हर समय एक तृष्णा बनी रहती है वह है भजन भक्ति की ।

हमारे पहले से जो षष्टि पूर्ति महोत्सव का आयोजन किया गया है इसी प्रकार नित्य भजन भक्ति होती रहे तो इससे अधिक और क्या हो सकता है ।

यह शब्द प.पू.आचार्य महाराजश्री का है । ता.८-१-०४ के दिन श्री स्वामिनारायण बाग में जनमंगल नामावली को ६० वी सभा का आयोजन किया गया इस प्रसंग पर उपरोक्त वक्तव्य महाराजश्रीने दिया था ।

कोई भी प्रसंग, उत्सव हो उसका कोई न कोई तो कारण होता ही है । अपने प. पू. महाराजश्री की आगामी चैत्रवद तृतीया के दिन ६० वर्ष पूरा हो रहा है । जिस निमित्त २-४-०४ से ८-४-०४ तक सप्तदिनात्मक "षष्टि पूर्ति महोत्सव" का आयोजन किया गया है ।

संगीतमय वातावरण में हरिकीर्तन से श्रीहरि की मनोहर मूर्ति का जैसे साक्षात्कार हो रहा हो । ऐसा ही कुछ महाराज श्री के षष्टि पूर्ति महोत्सव संमक का होगा ।

महोत्सव में पारायण, ज्ञानयज्ञ, महा विष्णु याग, अखंडधुन तथा सातो दिन कोई न कोई नया प्रोग्राम का आयोजन होता ही रहेगा ।

कौन - कौन कार्यक्रम होगे मंन्दिर

द्वारा ज्ञात तो होगा ही परंन्तु यह षष्टि पूर्ति महोत्सव का हेतु क्या है इसका ज्ञान सभी को होना जरुरी है।

प्रथम वचनामृत में श्री हरि ने वर्षो वर्ष उत्सव करने का रहस्य अच्छी तरह समझाया है।

इसीलिये हम बडे-बडे विष्णु याग करते है। जन्माष्टमी तथा एकादशी इत्यादि व्रतो का उत्सव वर्षो तक करते रहते है। इन सभी कार्यक्रमो में सन्त, ब्रह्मचारी, सत्संगी सभीको एकत्रित करते है यदि किसी पापी जीव का अंतिम समय में प्रभु का स्मरण हो गया तो भगवान के धाम की प्राप्ति होगी। (ग.पु. ३)

अपने षष्टि पूर्ति महोत्सव का हेतु एकदम स्पष्ट है। एकबात सदा ध्यान रखने के योग्य है कि अपना सत्संग- श्री हरि द्वारा प्रेरित मूलभूत प्रणालिका का सांगोपांग अनुसरण करने वाला सत्संग है। दूसरी तरफ हम सभी के हृदय में विराजमान सभी के प्यारे प. पू. महाराजश्री के जीवन की इति वृत्ति है जो श्रीहरि के स्वस्म का स्मरण कराने वाली है।

इस प्रकार के अपने पू. महाराजश्री हैं यही हम सभी की अहो भाग्य है। ऐसे आचार्य महाराज की षष्टि पूर्ति महोत्सव मनाया जायेगा जिसमें श्रीहरि का स्वस्म सभी के हृदय में अंकित हो जायेगा। ऐसे महाप्रतापी देव के आंगन में इस प्रकार के उत्सव में यदि हम भाग नहीं ले सके तो हम बाहर खडे ही रह जायेगें।

श्रीजी महाराज भी जब होली हो तब फूल दोलोत्सव दीपावली हो तब अन्नकूट इत्यादि का उत्सव मनाने और देश विदेश में रहने वाले भाई-बाई, साधु, ब्रह्मचारी सत्संगी सभी को एकत्रित करते और उत्सव के माध्यम से एक दूसरे के व्यवहार का आदान प्रदान होता। जिस गांव में उत्सव होता उस गांव के चारो तरफ से मानवमेदिनी उमड पडती जैसे नदी का प्रवाह वह चला हो।

इसी प्रकार हमभी षष्टि पूर्ति महोत्सव में मानव मेदिनी की धारा का दर्शन करेंगे। गांव - गांव से, शहर - शहर से, देश - विदेश से खूब बडी संख्या में लोग आयेंगे। महोत्सव का प्रांगण विविध कार्यक्रमो से भरा रहेगा। इसमें गांवो से आने वाला छोटा हरिभक्त रहेगा। विदेशसे आनेवाले बडे हरिभक्त भी रहेगे। प्रत्येक के अंग अलग भले क्यों न हो लेकिन सभीका हेतुतो एकही रहेगा। क्यों कि अपने आचार्य महाराजश्री तथा नरनारायणदेव देश की गादी की गरिमा दोनों की शोभा का दर्शन होगा। इसके साथ अपने सत्संगी लोग एक दूसरे के विचारो का आदान प्रदान करेंगे।

जीवन में जैसे छत्रछायाका महत्व है। इसी प्रकार सत्संग मेंभी छत्रछाया का महत्व है। बालकपन से जिस बालक के माता पिता की छत्र छाया छिन गयी हो दोनो जैसे अन्तर होता है ठीक यही स्थिति अपने सत्संग की छत्रछायां में है।

अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति श्रीहरि श्री स्वामिनारायण भगवान अपने पिता है। उन्ही द्वारा स्थापित गादी और उसी गादी पर बिराजमान पू.आचार्य महाराजश्री अपनी छत्रछाया है। धर्म मर्यादा में रहकर इस छत्र छाया की मर्यादा तथा आज्ञा में व्यवहार करना संस्कारी एवं विवेकी सत्संगी की फरज है।

आने वाले महोत्सव समक को ऐसा सुरीला बनाये कि इसमे कोईभी विमुखजीव आये तो उसका कल्याण हो जाय।

श्रद्धा के साथ तथा ईर्ष्या से रहित होकर इस उत्सव को मनाये।

अन्त में अपने इष्टदेव को प्रसन्न करने का यह अचूक अवशर प्राप्त हुआ है।

मोटा देव मोटा मंदिर, आचार्य अमारा मोटा रे। हथेली में भी चांद बताये, तोय अन्य प्रहरी खोटा रे॥ अपने पूज्य महाराजश्री जिस गद्दी पर बिराजमान है इस गादीकी महत्ता तथा गरिमा को बढाने का उत्सव है। आनंदित होकर डूबजानेका अवशर है।

यह महोत्सव सभी के अन्तर को झंकृत करदेनेवाला उत्सव है जिसका लाभ सभी को लेना है।

जेतलपुर मंदिर द्वारा श्री हरिकृष्ण चरित्रामृत सागर का प्रकाशन

प. पू. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान से सम्प्रदाय के प्रचार प्रसार का कार्यक्रम साहित्यप्रकाशन द्वारा किया जाता है। जेतलपुर मंदिर से प. पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शास्त्री स्वामी पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में स.गु.माधवदासजी स्वामी द्वारा लिखी गयी "श्री हरिकृष्ण चरित्रामृत ग्रन्थ की द्वितियावृत्ति का प्रकाशन किया गया। जिसमें प. भ. केसर प्रेमजीभाई करशनभाई की धर्म पत्नी के परिवार की तरफ से सम्प्रदाय के साहित्य प्रकाशन में सेवा करके सम्प्रदाय की बडी सेवा किये है। अहमदाबाद मंदिर साहित्य केन्द्र तथा जेतलपुर इत्यादि मंदिरो के साहित्य केन्द्र पर यह पुस्तक उपलब्ध है।

महंत के. पी. स्वामी

नाम स्मरण महिमा

. अमृत के.मोदी (सोजा)

प्रत्येक मनुष्य को सतत परमात्मा का स्मरण करना चाहिए तभी परमात्मा भी उसका स्मरण करते है । परमात्मा प्रत्यक्ष स्म में दृष्ट नहीं होते बल्कि परोक्ष में रहकर अपने भक्त का संम्पूर्ण कार्य करते रहते है । इस लिए प्रभु नाम स्मरण कभी भूलना नहीं चाहिए ।

जे स्वामिनारायण नामलेशे
तेना बधा पातकबाणी देशे
छे नाम मारा श्रुतिमां अनेक
सर्वोपरि आज हणाय एक,
जे स्वामिनारायण एकबार रटे,
बीजा नाम रट्या हजार
जप्या थकी जे फल थाय एनुं
करी शके वर्णन कोण तेनुं
षडक्षरी मंत्र महा समर्थ
जेथी थशे सिद्ध समस्त अर्थ,
सुरवी करे संकट सर्व कार्य थे
अंते वणी अक्षरधाम आपे ।
(हरिलीलामृत)

भक्त प्रहलाद को जन्म समय से ही प्रभु का नाम स्मरण था । उस,के पिता हिरण्याकशिपु प्रभुनाम स्मरण छोडाने के लिए बहुत प्रयत्न किये । लेकिन सम्पूर्ण प्रयत्न व्यर्थ हुआ । भक्त प्रहलाद रात दिन एक मात्र प्रभुनाम स्मरण की टेक लगाये बैठे थे । जिसकारण हर दुःख की घडी में प्रभुने उनका साथ दिया और हर प्रकार से रक्षाभी की । लेकिन आज तो सबकुछ उल्टा हो गया है । ''सुख मां सांभरे सोनी, दुःख मां सांभरे राम'' भक्त पहलाद के पिता महानज्ञानी थे, लेकिन भगवान के नाम के साथ बैरथा । जिस कारण उसने तपस्या करके ब्रह्माको प्रसन्न किया और किसी से तथा कभी न मरने का वरदान माग लिया । परंन्तु भक्त प्रहलाद की टेक को पूर्ण करने हेतु भगवान को खंभे में से प्रगट होना पडा –

भक्त प्रहलादनी टेक तमे राखता
स्तंभ दीधो तो फोडी

परिणाम स्वस्म भगवान ने भक्त का वचन रखा और हिरण्यकशिपु का बध किया । भक्ता का जीव दयालुं होता है इस लिएअपने पिता का प्रभु से कल्याण ही मांगा ।

दूसरीबात भक्त ध्रुव की है ध्रुव के पिता को दो रानिया थी । सुरुचि एवं सुनीति । सुनीति ध्रुव की माता थी । और सुरुचि मैभा माता थी संयोग वश उसने ध्रुव को टाना मारा कि अपने पिता की तुम्हे गोंद में बैठना था तो मेरी कोख से पैदा होना चाहिए था । यह बात सुनकर ध्रुव व्याकुल हो उठे और अपनी माता सुनीती के पास गये और आपबीती सुनाये । इस पर माताने उन्नत मार्ग बताया और कहा कि तूं भगवान के नाम का स्मरण कर जिससे अचल स्थान को प्राप्त करेगा । परिणाम स्वस्म आज उन्हीं को ध्रुव तारा के स्म में हम सभी जानते है । यह प्रभु के नाम स्मरण के महिमा का प्रताप है ।

अपने शास्त्र में नाजा जोगिया की कथा आती है । नाजा जो गिया जसदण भोयरा में रहता था तथा भगवान के नाम स्मरण का उपदेश करता रहता था । इस गॉव के राजा का नाम बाजसुर खाचर था । वह सामान्य दोष होने परभी मनुष्य के हाथ पैर तोडकर खडढे में फेंकवा देता था । बाद में तडपा-तडपा कर मरवाता था । नाजा जो गिया को इस प्रकार के दुःख देखकर एकदिन राजा को उपदेश देने की इच्छा हुई । वह बाजसुर के दरबार में गया । और उससे कहा कि लोगो के हाथपैर तोडकर तडपा कर मारते हो यह ठीक नही । ''बाध को कौन कहेगा कि तुम्हारा मुंह गंधा रहा है'' । नाजा जोगिया के लिए तो यह उपदेश पीडाकारक हो गया । बाजसुरखाचर ने कहा कि ''तुम मुझे सलाह देने वाला कौन ? यदि तुम्हारा स्वामिनारायण सच्चा हो तो कल सूर्योदय होने तक मुझे दर्शन दे । अन्यथा तुम्हारी भी यही दशा करेंगे । नाजा जोगिया घर आया खाना पीना सभी छोड दिया लेकिन भगवन्नाम स्मरण नही छोडा । वह घर में ही आसन जमाकर भगवान स्वामिनारायण का नाम स्मरण करने लगा । उस समय श्रीजी महाराज विसनगर में बिराजमान थे । वे सात्रि में जग गये और ब्रह्मचारी को कहे कि तैयार हो जाओ जसदणभोयरा जाना है । परंतु महाराज इस समय ? भगवान ने कहा हॉ अभी इसी समय मेराभक्त मुझे पुकार रहा है । यदि मैं नही जाउं तो कमजोर कह लाउंगा । स्वामिनारायण भगवान प्रातःहोने के साथ ही भोयरा पहुंच गये और भक्त से कहे कि चलो बाजसुर खाचर को दर्शन दे आये । बाजसुर भगवान को आया देखकर पैर में गिर पडा और नमस्कार करके उनका

आश्रित बन गया । यह नाम जप की महिमा है ।

जब भगवान राम वन में गये तब शबरी नाम की एक भीलिन झोपडी बनाकर रहती थी उसी में भगवान कें नाम का स्मरण करती और याचक पक्षी की तरह उनके आने की प्रतिक्षा करती रहती थी । भगवान शबरी के यहां पदार्पण किये और उसके जूठे बैर फल खाये । यही प्रभु के स्मरण की महिमा है ।

भक्ता मीराबाई भी भगवान कृष्ण के नाम में रंग गयी थी- ''गोविन्दा प्रीतम अमारा रे'' मने जग लाग्यो खारो '' राजा तो मीरा को मारने के लिए विष का कटोरा भगवान का प्रसाद करके भेजा उसे भी प्रसाद मानकर पी गयी । कुछ असर नहीं हुआ । भगवान प्रत्येक पल में अपने भक्त की रक्षा करते है ।

इसी प्रकार नरसिंह महेता भी रात्रि-दिन श्री कृष्ण का स्मरण करते रहते थे -

कुंवरबानु मामेरु करवा, वणिक बन्या वनमाली,

ओ मारा वहाला बनीने कुंवरबाईनुं मामेरु करी आव्या

भरी सभामां द्रोपदी पुकारे
चिर पूर्याते मोरारी, ओ मारा
वहाला तारो भरोसो मुने भारी ।

द्रोपदी अपनी साडी फाडकर कृष्ण को पट्टी बांधी थी तो भगवान ने भी नों सौ निन्यान्वे चीर बढाकर उसकी लाज बचाई थी यही नाम स्मरण की महिमा है ।

भगवान के नाम स्मरण से हृदय में विशेष रुचि एवं प्रेम उत्पन्न होता है। मनुष्य कोई भी कार्य करे उस कार्य के करते रहने से अपने आप रुचि पैदा हो जाती है । उसी प्रकार भगवत नाम स्मरण से रुचि पैदा होती है ।

एक काजु कोटेश्वर गाम
तियां भक्ति रहे झवेरनाम

यह बात कोटेश्वर गांव में रहने वाले झवेरनाम के एक भगवत भक्त की है । वह प्रतिदिन प्रातः उठकर स्वामिनारायण स्वामिनारायण बोलते हुए नदी में स्नान करने जाता था । जिससे गांव के लोगों में कुसंग की भावना होने से उस भक्त का अहित करना चाहते थे ।

पापी कहे पाप लाग्युं तने
एक मूकी बीजो कर्यो बाप ।

झवेर ने कहा मैं दूसरा बाप नहीं किया हूं ।

स्वामिनारायण नाम इस कलिकाल में सत्य है । वे कुसंगी कहने लगे कि यदि तुम सच्चे हो और स्वामिनारायण सत्य है तो इस शिवालय के उपर से कूदकर बताओ ।

पछी भोलो भक्ति बुद्दिबाल
चढ्यो शिवालये तत्काल ।
मेल्युं त्यां थकी पडतुं तन
स्वामी, स्वामी करता भजन ।

झवेर शिवालय के शिखरसे कूद गया ।

रह्यो आखे अगीये नाव्यो आप
न जणाणुं वयुमांथी वाल
करी जग जीवने जतन
पापी विमुख पाछेरा पड्या
सत्संगी अंगे रंग चड्या ।

झवेर को सही सलामत देखकर विमुख लोग भाग गये । सहजानंद शरण पकडी

स्मरण हरिनुं आदेश ।
निष्कपट भक्ति करी
अक्षरधाममां बास करी ।
फरी जोग आवो नहि मले
ते बात नक्की निदान छे ।
आत्मा कैसे मोक्ष करवो
एज आपनो काम छे ।

बडे आश्यर्य एवं दुःख की बात तो यह है कि इस संसार में लोग लखपति को श्रेष्ठ एवं

सुखी मानते है । परंतु भगवान के नाम का एकलाख जप करने वाले को कोई श्रेष्ठ एवं सुखी नही मानता । लेकिन विचार करो लखपति जब मरता है तब एक कौडी भी साथ लेकर जाता नहीं है । हां भगवान का लाख नाम स्मरण करने वाला मृत्यु के बाद भी नाम स्मरण, जप स्मी धन, साथ लेकर जाता है । तो दोनो में श्रेष्ठ कौन ?

तारी एक एक पल जाय लाखनी
तू तो माला जपीले रे घनश्याम नी
खाली अव्या खाली जाशो, साथे शुंलाव्या लई जाशो ।

जीवन धन्य रे बनावो भक्ति भावथी । तारी एक एक पल जाय लाखनी

इस संसार स्मी माया को छोडकर जब जाते है तब खाली हाथ जाते है तो भगवत नाम स्मरण स्मी भक्ति का पाथेय तैयार करना चाहिए ।

अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति के आयोजन में भी नाम स्मरण, जप यज्ञ, को महत्व दिया गया है । तो हम भी मंत्र लिखने की नोटबुक लिखकर नाम स्मरण में भाग लेकर अपने जीवन को धन्य बनायें अस्तु ।

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीकी दिव्य वाणी

संपादक - महंत भक्तवत्सलदास (लींबडी)

प. पू. ध. धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के सत्संग सभा में बाल्यावस्था का एक अदभुत प्रसंग कहते है । जब हम छोटे थे स्कूल पढने जाते थे उस समय स्कूल के सामने एक लारी वाला मूगफली बेचता था । एक दिन सभी बच्चो से कहने लगा जिसे मूंगफली लेनी हो उसे बिना पैसे में आज देगे । आज बेंचना नहीं है भेंट देना है । उससें मैंने पूछा कि क्यों ऐसा कर रहो हो ? तब उसने कहा कि आज मुझे लाटरी लग गयी है । इस लिए आजसे मूंगफली बेंचना बन्द कर दिया हूं । प्रसंग की यथार्थता समझाते हुए महाराजश्री ने कहा कि हम सभी को श्रीहरि स्मी लाटरी लग गयी है तो अब अन्य पुस्मार्थ करने की क्या आवश्यकता ।

हमें तो सर्वोपरि श्रीजी महाराज मिले है जिन्होने अन्न वस्त्र को पूर्ण करने का वचन दिया है तथा जीव मात्र के कल्याण का वचन दिया है तो ऐसी लाटरी को तो प्राप्त करके, अन्यत्र का प्रयास व्यर्थ है । फिरभी असमझ के कारण बहुत लोग मूंगफली वेचना चालू ही रखे है । हमारी समझ तो लारी वाले के जितना भी नही है । नरनारायणदेव स्मी लाटरी लगने के बादभी अन्यत्र प्रवृत्ति करना मूर्खता पूर्ण कह लायेगी ।

इस जगत में संत सत्संग से अधिक प्रिय कोई वस्तु होती ही नहीं चाहिए । जैसे लारीवाला लारी की सम्पूर्ण मूंगफली खाली कर दिया और उसी लारी में अमूल्य रत्नो को बेचा, तो क्या हम लोग अन्तःकरण में अनंत राग-द्वेष ईर्ष्या इत्यादि को निकाल कर परमात्मा का वास कराये तो निश्चित ही सत्संग स्मी बडे खजाने की प्राप्ति होगी । हमें तो सत्संग को बेचना नही है बल्कि खरीदना है, खरीदना भी है तो उत्तम ओथोराइड डीलर के पास से जहां से उत्तम वस्तु खरीदी जा सके । अन्यथा नकली माल आजाय तो अपनी मशीनभी बिगड जायेगी और मूल सच्चे सम्प्रदाय से अलग होने पर मशीन के बिगडने की स्थिति होगी, अतः अपने मूल सम्प्रदाय को पहचानना होगा । और उसके सिद्धान्त के अनुसार व्यवहार करने से अपना अवश्य कल्याण होगा ।

इस गंभीर दृष्टांत के बाद पूज्य महाराजश्री ने भाग्यशाली तथा बडभागी का अर्थघटन करते हुए कहा कि हमारे मत से सब बडा भाग्यशाली वह है जो देश कालादिक के झंझावात को सहते हुए भी अपने मोक्ष तत्व को बिगडने नही देता है । तथा सबसे बडा अभागी वह है कि जो प्रभु की कृपा से सत्संग में रहते हुए भी अपना मोक्ष हो ऐसा कोई उपाय नहीं करता है ।

प्रियभक्तजन पूज्य आचार्य महाराजश्रीकी अपनी ६० वर्ष की उम्र में इस ,सत्संग समाज को जितना दिया है वह अपरिमित है । जो अपने शरीर की परवाह किये विना रात दिन सम्प्रदाय सत्संग के लिये गतिमान रहे और आजभी वही गति है जो प्रत्यक्ष देश विदेश में देखते ही बनता है । ऐसे गुस्देव की गुस्मूजा करने का अवशर सभीको प्राप्त हुआ है तो उन्ही की षष्टि पूर्ति महोत्सव में तन- मन-धन समर्पित करके मोक्ष के भागी बने ।

धार्मिक परीक्षा का गौरव

प.पू.ध.धु. आचार्य श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज केववणी ट्रस्ट संचालित श्री सहजानंद प्राथमिक शाळा में कक्षा ९ में अभ्यास करती विधार्थीनी कु उर्मि विनयकुमार भट्ट शाला में ली गयी धार्मिक परीक्षा में ९९ % प्रतिशत के साथ उत्तीर्ण हुई जिससे शाला का गौरव बढा ।

आभार स्वीकार

पू. महंत स्वामी निर्गुणदासजी की प्रेरणा से प. भ. डॉ. हर्षदभाई कस्तूरचंद द्वारा लिखित "संस्कार संहिता" पुस्तक का प्रकाशन किया गया । जो सभी के लिए उपयोगी है ।

युवाचार्य प. पू. लालजी महाराज श्री के मुख की अमृतवाणी

गोरधनभाई वी.सीताराम (हीरावाडी बापूनगर)

प. पू. लालजी महाराज श्री १०८ कोशलेन्द्र प्रसादजी का जन्म भगवान श्री स्वामिनारायण के सातवें वंशज के रूप में दशहरा के दिन हुआ था। दशहरा का दिन अर्थात विजय का दिन रावण पर श्री राम की विजय। आसुरी शक्ति पर दैवी शक्ति की विजय। जैसे भगवान स्वामिनारायण के योग में जो आसुरीतत्ववाले महापापी आये वे सभी बन्दनीय भक्त राज बन गये। उसी प्रकार इस कलिकाल में प. पू. लालजी महाराज श्री के योग शिबिर में जो युवान आये सभी निर्व्यसनी बन गये। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, जैसे बडे बलवान शत्रुं भी दासानुदास बन जाते है। इतना ही नहीं बल्कि पू. लालजी महाराजश्री ऐसा इन युवानो को प्रेम दे दिये है कि अपने विस्तारे के सिवाय कहीं भी शिबिर हो तो ये युवान उस शिबिर में अवश्य हाजिर होते ही है। यहॉ हो या छपैया की तीर्थ भूमि में हो जहॉ कही भी हो युवान अपने वाहन से उपस्थित हो जाते है। प्रत्येक स्थल पर लालजी महाराज के दर्शन का लाभ, आशीर्वाद, प्रसन्नता इत्यादि की प्राप्ति का लाभ मिलता है। सत्संग की सेवा, सन्तो की सेवा, लालजी महाराजश्री की सेवा सभी युवान एक पैर पर खडे होकर करते है। केलव भगवान, सन्त, महाराजश्री लालजी महाराज इन सभी की प्रसन्नता के लिए यह सभी प्रक्रिया होती रहती है। देश - विदेश में लालजी महाराजश्रीकी आज्ञा से नरनारायण देव युवक मंडल द्वारा छोटी बडी असंख्य सत्संग सभा का आयोजन होता रहता है। इन सभी सभाओ में पू. लालजी महाराज भक्तजन को आशीर्वाद देने अवश्य पधारते ही है।

ता. ११-१-०४ के दिन एप्रोच (बापूनगर) मंदिर में षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित एक सभा में पू. लालजी महाराज श्री ने जो आशीर्वाद दिया उसे यहॉ प्रस्तुत कर रहा हूं। लूट पाट, मार धाड, जिसका धन्धा था ऐसा वह वीरा भगत जो एकबार तलवार की धार करवाने गया उसे ऐसा हुआ कि इसमें धार हुई कि नहीं तो उसकी धार देखने के लिए बाहर आया और अमुक कोम के लोग सामने दिखाई दिये उसमें से ४.५ की गर्दन उडा दिया केवल तलवार की धार देखने के लिए ऐसा पराक्रम ? बाद में वही वीरा भगत महाराज का परम भक्त बन गया। एकदिन महाराज ने उसे कहा वीरा भगत बावल की दातोन ले आओ, वह गया काट - साफ करके महाराज को दिया। महाराजने कहा दातोन कहा से लाये ? खेत में से अच्छा कूंचा देखकर लाये है। खेत में बाड तो होगी। उसके मालिक से पूछे ? महाराज ? सम्पूर्ण जीवन विना पूछे ही लाया हूं पूछने की क्या जरूरत भगवान की आज्ञा हुई अत: खेत के मालिक के यहॉ गया और कहा कि मैं बिना पूछे आप के खेत में से दातोन तोड लिया हूं, तो मालिक ने कहा इसमें पूछने की क्या बात है। जब भक्त ने नाम दिया तो खेत का मालिक कांपने लगा। क्योकि उसकी धाकथी, उसका नाम था। लेकिन भगत तो इतना भक्त बन गया था कि भगवान तो सभी के विचारो का परिवर्तन कर देते है। उत्पति स्थिति एंवं प्रलय के वे ही कारण है। स्वभाव परिवर्तन कौन कर सकता है वह कर सकता है जो वीर हो, सत्संग का रस लग गया हो।

अब तो अपनी क्रेडिट हो गयी है। कंठी तिलक चन्दन इत्यादि देखकर सभी लोग संमान के साथ देखते है। अन्यथा भगवान के समय उसके बादभी हमारे संत्संगी लोगो को तथा सन्तो को काफी दु:ख झेलना पडा है। तब जाकर आज समाज में बडी क्रेडिट मिली है। और हमलोग सुखी है। आज हमें उत्तम उत्सव करने का अवशर मिला है। शाकोत्सव हो या धनुर्मास सभी समय में सत्संग की सेवा तो होती ही है।

धन से ही सेवा नही होती बल्कि भजन से माला फेरने से भी सेवा होती है। यह सभी सेवा आत्मकल्याणार्थ होती है। यदि भजन, माला, न करें तो सबकुछ नष्ट हो जायेगा। भगवान को पहचानना होगा। उनके अनुकूल जीवन की धारा बहानी होगी तभी महाराज जीवो को स्वधाम ले जायेगे।

सुरा खाचर को कितना विश्वास था। काठियावाडी पहनावा पहनकर वृद्धा गोबर थाप रही थी। सुरा खाचर ने कहा स्वामिनारायण बोलो लेकिन बोल नही पायी। सुराखाचर सभी थापे

गये गोबर को बिगाड दिये वृद्धा ने कहा तेरा स्वामिनारायण मरे तू भी मरजा । जब ऐसा क्रोध में कहा तो सुरा खाचरने कहा कि अब मेरा काम हो गया । तूं स्वामिनारायण नाम ली अब तेरा कल्याण हो जायेगा ।

हम लोग शाकोत्सव करते है । उसमें केवल सत्संगी ही खाने नहीं आते जो सत्संगी नहीं हैं वेभी आते हैं । उनमें भी सत्संग का गुण आवे इस लिए उत्सव होता है । शाकोत्सव का प्रसाद जिसके पेट में पडे वह निश्चित किसी दिन अवश्य बोलेगा । स्वामिनारायण मंदिर की खीचडी या कढी या रोटी जो भी हो खाया रहेगा तो अवक्ष्य स्वामिनारायण का नाम लेगा ही । महाराज याद आयेंगे मूर्ति याद आयेगी तो अन्तिम में भी यही स्थिति रहे तो महाराज लेने आयेंगे और उस जीव का कल्याण हो जायेगा । सब कुछ याद आवे लेकिन उधार याद न आवे । नहीं तो अन्तिम समय में तकलीफ होगी । इसी कारण से महाराज उत्सव करते थे । सभी लोग समझदारी के साथ सत्संग में रहिए एक दूसरे के पूरक बनिये ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना ।

हे महाराज ? आप भगवान है (मान कुवा के नाथासुथार)

ले.रसिकभाई रामजीभाई गेडरिया (हीरावाडी - बापूनगर)

कच्छ की पवित्र भूमिपर श्रीजी महाराज अनेक बार विचरण किये थे, उसमें भी भुजनगर सहित मानकुवा, रामपुरावेकरा, बडादिया ऐसे गावो में महाराज के चरण अनेको बार पडे थे । इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण मानकुवा में नाथासुथार के यहाँ भोजन करने से पहले आधाशेर मर्चा का गुण बनाकर कढी में डलवाया और उसे खा गये थे । इस प्रकार भोजन का रसास्वाद चार दिन तक किये और बाद में चलने लगे । जब नाथा की मां ने कहा कि आप साथ में नाथा को लेते जाइए आपको छोडकर वापस आजाएंगा ।

रास्ते में महाराज नाथा के साथ भगवत सम्बन्धी वात करते जा रहे थे। उसी समय नाथाने कहा हे महाराज ? आप भगवान है ? महाराजने कहा मैं भगवान नही हूं । हमतो भगवान के संत है । इस प्रकार बात करते करते बंगडी गाव आ गये। वहा एक तालाब था । किनारे पर बैठने का स्थान था । महाराज घोडे से उतरकर उसी स्थान पर बेंठगये और नाथा को कहे घोडा को पानी पिलाइये । नाथा पानी पिलाने गये और वहा गहरी खांई में घोडे के साथ गिर गये । दोनो डूबने लगे । भगवान यह देखकर हंसने लगे और १५० फूट दूर से ही अपना हाथ बढाकर घोडे के साथ बाहर निकाल दिये । उस समय घोडा को बाधकर नाथा महाराज के पास आये और कहने लगे महाराज अबतो बताओ कि आप भगवान है ? यदि आप अपने को भगवान नहीं कहेगें तो घोडे की डोरी से आपको मारुंगा । भगवान ने कहा कि मुझे मारना नहीं मैं भगवान हूं । तब नाथा ने कहा कि शास्त्रो में १४ रत्न बताये है १५ वां रत्न मार है । जिसकी डर से आपने भगवान को स्वीकार तो किया । भगवान नहीं होते तो १५० फुट लम्बी भुजा बनाकर घोडे के साथ आप हमें कैसे निकालते । अतः आप भगवान है ।

एक समय नाथा की मां ने महाराज से कहा । यह मेरा नाथा पागल है जैसे तैसे बोल जाता है । यह सुनकर हमे उपवास करना पडता है । इसलिए आप इसे साथ ले जाइए । जब श्रीजी महाराज ने कहा आप ने नाथा को हमें दे दिया अच्छा किया । हम इसे साथ ले जायेंगे । इसे सिद्ध बनादेंगे भगवान के साथ नाथा रहने लगा । नाथा अन्तर्यामी बन गया । वह किसी के भूत वर्तमान भविष्य सभी जानलेता था । उसे भगवान की कृपासे ज्ञान शक्ति इतनी अधिक हो गयी कि पूर्वजन्म की बात कहने लगा । यह इस गाव में पहले यह था इत्यादि सभी प्रकार की बात कह देता था ।

यह मानकुवा गांव भुजनगर से ४ कोश दूर पश्चिम दिशा में है । उस गाव में १५ से २० बार महाराजनें पदार्पण किया । वे जबभी जाते तब नाथा के घर ही उतरते थे । कच्छ भुज को पंचतिर्थी के सत्संगमें इस का नाम आगे आता है । ऐसा मानकुवा गांव धन्य है जिस गाव में महाराज की चरण रज बारम्बार पडती रही । जिसके चरण रज से अंकित है।

वह इष्टदेव हमारा है

अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला (न्युयोर्क यु.एस.ए.)

वृन्दावन में सरवान कवि हो गये है। जाति के मुसलमान थे लेकिन भगवान कृष्ण के अनन्म भक्त थे। भगवान कृष्ण को इष्ट मानने थे और उन्हीपर आने को पद की रचना किये।

मुसलमान होने के नाते सगा सम्बन्धी इनकी खूब भत्स्ना करते थे नाना प्रकार की टीका करते थे तूं मुसलमान वे हिन्दु के भगवान ? रसरवान एकही उत्तर देते - टेढापाव टेढी मोरली, बोले ढेढीबोली।

मुकुट धारे भले ही बांका, फिरभी वह इष्टदेव हमारा। वह जैसाभी है हमारा इष्टदेव है। मेरो तो गिरधर गोपाल दूसरो ना कोई। ऐसी भावना मीरा में थी जिससे विष का प्याला भी अमृत समझकर पी गयी थी। समाज में किसके मुंह को बन्द किया जाय बोलने वाले बोलते ही रहेंगे इन्हे कौन रोक सकता है। भक्तिभाव की टीका तो होती है। चन्दन-तिलक करके निकलेंगे तो अनश्य समाज के लोग कहेगें देखो यह स्वामिनारायण वाला निकला। भगवानने जो साम्प्रदायिक आज्ञा की हैं उसका यथार्थतः पालन करना हमारा धर्म है। इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण हमारे लिये कोई कमी रखे ही नही। भगवान की उपासना कैसे करना, अपने नीतीनियम का पालन कैसे करना इत्यादि का निर्देश शास्त्रों द्वारा किया है।

शिक्षापत्री अर्थात सभी शास्त्रों का नवनीत है। सभी शास्त्रों का दोहन करके शिक्षापत्री स्मी मक्रवन को निकाल कर हम सबी को दिया।

"ए रसना चारवगहार, छाश में नव पीवे रे लोल।"

ऐसे अमृत रस को छोडकर छाश जैसे कनिष्ट वस्तुके पीने का मोह कौन करेगा।

हमारे इष्टदेव भी कृष्ण हैं उन्ही की उपासना करनी चाहिए जो सभी अवतारो के अवतारी हैं। (शि.प. १०८) श्री कृष्ण भगवान की कोई निंदा करता हो तो उसे नहीं मानना चाहिए। (शि.प. ३८) इन दोनो आज्ञाओ का परस्पर अनुसंधान रखे तो सबकुछ इसी में आ गाय। अपने इष्टदेव की आज्ञा में रहकर वर्तन करे तो सम्पूर्ण तीर्थ - (काशी - मथुरा - गंगा - गोदावरी) इसी में आजाता है जिसे राम ब्रह्मचारीने स्पष्ट कहा है--

ना कईगंगा गोदावरी काशी।
धर वैण मिला अक्षरवासी॥

कारण अतिसूक्ष्म होतो है लेकिन कार्य विशाल होता है जैसे बडका बीज कितना छोटा होता है लेकिन उसका वृक्ष कितना विशाल होता है। अपने अष्टदेव भी ऐसे ही हैं इसी लिए सर्वोपरि कहा जाता है।

सम्पूर्ण शरणागति के विना भजन भक्ति में सुख नहीं मिलता। सभी समर्पण करके अपने इष्टदेव को हृदय में उतारे तभीं सच्ची निष्ठा एवं भक्ति कही जायेगी। (व.ग.म. ९)

पार्वतीजी शंभुके प्रति अटलप्रतिव्रता भक्ति है -

कोटी जनम यह रगड हमारी। बरुं शंशु के हुं कुवारी॥

लक्ष्मणजी सीताजी को वन में छोडने गये तब सीताजी रोने लगी लक्ष्मणजीने कारण पूछा तो सीताजी ने उत्तर दिया-

मैं अपने दुःख से नहीं रही हूं बल्कि रघुनाथ अकेले हो गये वे दुःखी रहेंगें इस लिये रो रही है।

सुरा खाचर अथवा रतनजी मियांजी या मूलजी ब्रह्मतारी कहाँ बहुत ज्ञानी थे, फिरभी भगवान ने उनके भक्तिती प्रशंसा की है। उनके मन में केवल महाराज की आज्ञा में वर्तन करना था जिससे भक्ति श्रेष्ठ हुए। सगराम, वजेसिंह सबी भगवान के स्वस्मको पहचाने थे।

एकबार सगराम से भगवानने पूछा कि स्वामिनारायण गधे को गांव बनाते है यह सही है तब उसने कहा हॉ ? इसमें मैं खुद प्रमाण हूं वोछरी जाति का मैं मुझे कौन पूछता तो गधे को गाय बना मे है न ? बात कितनी सरल है केवल भगवान के स्वस्म को पहचान कर शरणागति स्वीकार कर लेना है।

शरणागत पाप पर्वत गणपित्वा न तदगुणम।

अणुमप्यतुलं हिमन्यते सहजानन्द गुरुं भजे सदा॥

दीनानाथ भट्ट को भगवत स्मपूर्ण कंठ था फिरभी मोक्षा थापक कौन है यह पता नहीं था तो भगवान स्वामिनारायणने उपरोक्त श्लोक का हार्ध बताया तो उन्हे ख्याल आ गया।

अनु. पेईज नं. १९ पर

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

आधी रात में अभिमान गया

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

यह काम मै हूं तो हो रहा है, यह जो कुछ चल रहा है वह मेंरी वजह से मैं इस कुटुन्ब का बडा हूं, मैं कमाता हूं तो सबी सुखी है यदि मैं नही हो तो सभी क्रिया बन्द हो जायेगी । सभी भूखे मरने लगेंगे ।

इस प्रकार का अहंकार युक्त प्रायः सभी के मुख से सुना जाता है। लेकिन किसी प्रकार के काम में अहंकार कार्य का बाधक वनजाता है संसार का कर्ता धर्ता भगवान है ।

किसी एक गांव में एक महात्मा रहते थें । उन के पास दब कोई आता तो उसे पास बैठाकर उपदेश की बात करते । एकदिन एक आदमी ने प्रश्न किया कि जब सबकुछ करने वाले भगवान है तो मेरे पास कुछ नहीं है । पगार आती है तो उसमेसे जैसें तैसे चलता है । भगवान क्या घर देने आनेवाले है ?

तब महात्माजी ने कहा ? अरे भाई आपकी बात सही है । भगवान किसी का बोझा उठाने नहीं आते है, हां समय आने पर जिस किसी प्रकार ऐसी व्यवस्था करा देते है उसका कार्य हो जाता है यदि गले के नीचे बात नहीं उतरती हो तो मेरे साथ यात्रा पर चलो । बाद में वह प्रसन्न होकर साथचल दिया । दिन प्रतिदिन नीतता गया । तथा गांव नया लोग । नया मंदिर नपास्थल उसे हो मजा आने लगी । इस प्रकार पांच महीना बीत गया ।

इधर पली कपडा बर्तन करके पांच बचच्चचों का भरण पोषण करने लगी । लेकिन एक वज्रपात जैसी घरना हुई जिस महात्मा के साथ वह व्यक्ति गया था वह मर गया इस प्रकार का सन्देश महात्मा ने एक व्यक्ति से कहवाया और यहभी कहवायाकि तुम्हारी देख रेख भगवान करेंगे इस लिये दुःखी मत होना ।

इस प्रकार का समाचार सुनकर महिला की छाती फर गयी और पुक्को छोड कर रोने लगी उसके साथ सभी वच्चेभी रोने लगे । अडोश पडोश के लोग एकठ्ठा हो गये । सबी लोग सहानुभूति व्यक्त करने लगे कोई ने खावे - पीने तता बच्चो के वस्त्रने की व्यवस्था का भार ले लिया । कुछ लोगों ने दान स्म में जमीन भी दे दी ।

एकाध महीना में पति के मरने की याद विस्मृत हो गयी बच्चे स्कूल पढने जाने लगे । कुछ खेत में काम करने लगे । घर का कार्य अच्छी तरह चलने लगा । समय बीतते देर नही । इस प्रकार दो वर्ष निकल गये ।

एकदिन सबी भोजन करके ओसारी में बैठे थे और बात कर रहे थे इतने में कोई एक व्यक्ति आया । इसे भी वे ही महात्मा भेंजे थे । उसने बताया कि जो तुम्हारा पति मरा था वह तुम्हारे में वासना होने के कारण बहुत बडा प्रेत बन गया है । उसके कल्याणार्थ महात्माजीने बहुत जप तप किये लेकिन भूतपोनि से मुक्त नहीं हुआ कभी भी आसकता है । सावधान रहना । इतना कहकर वह मनुष्य वहा से चला गया ।

इसके बाद सबी ने विचार किया कि सुबह होने ही उपरोहित को बुलाकर विधि करा देना होगा । इस समय तो कुछ नहीं हो सकता । फिरभी तैयारी करके रखो जब ऊी यहां आये उसे लकडी पत्थर से सामना करना है ।

यात्रा में जिसे साथ में ले गये थे उसे सच्चा पाठ पढाना था । इस लिये महात्माजीने यह युक्ति बनाई थी । सभी तीर्थ करके वापस आये साथ में जिस आदमी को ले गये थे उससे कहे कि तुम रात्रि को १२ बजे ही जाना जिससे तुम्हारे घर की सही खबर पडे ।

महात्माजी के कथनानुसा ठीक १२ बजे वह आदमी अपने घर पहुंचा उसी समय उसकी पत्नी गाली देना प्रारंम्भ कर दी अरे ? नीच अधम ? आत्मा ? तू तीर्थ में मरा सभी विधि की हुई तो भी तुम्हारी सदगति नहीं हुई । तुम्हारे मरने से सभी परिवार सुखी हो गया । अभाग यहा से वापस लौंटजा नहीं तो पत्थर मार मार कर मार डालेंगे । इस प्रकार का वाचावरण देखकर उसके मन में आया कि यहा से वापस जाना ही ठीक है इस लिए महात्मा के पास वापस जा कर सभी आपपोती बता दिया ।

तब महात्माजीने कहा कि उस समय तुम कहते थे कि मेरे विना घर की परवरीश कौन करेगा । अब तो भगवान कितना सुंन्दर घर चला रहे है । यहीं पर एब रह संसार का मायाजाल छोड दे ।

मित्रों इससे हमें भी सीखना चाहिए कि भगवान के बिना कुछ नहीं हो सकता । हम तो केवल निमित्त मात्र है। अतः सत्कर्म करते रहना चाहिए ।

यह भी संसार हो जायेगा -

ह. जी. स्वामी (गान्धीनगर)

अशोकनगर का साजा सोमेश्वर एक बार पंडितो की सभा किये । सभी पंडित अपने अपने स्थान पर बैठ गये। कोई वेद वेदान्त का जानकार है। कोई उपनिषद, कोई पुराण, कोई ज्योत्ष, कोई खगोल, कोई व्याकरण, कोई धर्मकांड का जानकार है ।

राजा सोमेश्वर पंडितो का यथोचित संमान करते हाथ जोडकर पूछा कि हमें एक प्रश्न करना हे वह यह कि - सुख - दुःख में, हार-जीत में, प्रेरणादीयो सूत्र कौन है । पंडितो के पास असका कोई उत्तर नहीं था । अन्त में एक पंडितने कहा कि नदी के किनारे एक सन्त रहते है उनसे इसका समाधान मिल सकता है ।

पंडितो के साथ राजा नदी के किनारे गया निवेदन करके प्रश्न पूछा तो संत ने कोई उत्तर नहीं दिया । लेकिन एक अंगुठी दिये समाधान मिल सकता है ।

पंडितो के साथ राजा नदी के किनारे गया निवेदन करके प्रश्न पूछा तो संत ने कोई उत्तर नहीं दिया । लेकिन एक अंगुठी दिये और कहे कि अससे सभी आपके कार्य सिद्ध होगें । और सभी कार्य में प्रेरणा मिलेगी ।

एक बार पडोशी राजा अशोकनगर पर चढाई कर दिया पडोशी राजा के आगे सोमेश्वर हार गया । अपने अंगरक्षको के साथ आत्म रक्षार्थ जंगल में जाकर छिप गया । शत्रुपक्ष के लोग बहुत खोजे लेकिन राजा हाथ में नहीं आये ।

राजा शून्य मन का होकर विचार करने लगा कि राज्य वैभव में कितना सुख खा आज तो कितना कष्टमयजीवन बन गया है । इतने में राजा की दृष्टी अंगूठी पर पडी और साधुके शब्द याद आ गये तुरन्त ही स्थिति परिवर्तित हो गयी । सूय पढने के साथ ही राजा की बैचेनी दूर हो गयी । कर्मचारी गणबी मिल गये । नई आशा की किरन खिल उठी । पुनः संघबनाकर राजाने आक्रमण किया । दुष्मन पर विजय हुई । पुनः सोमेश्वर सिंहासनाशीन हुए । राजा को उस संत सूत्र याद आगये - "यह भी दूर हो जायेगा ।

प्रिय बालको ? यह संसार हार-जीत, सुख-दुःख की प्रयोग शाला है। इसमें अनेक संकटो के साथ का आना क्रम है । और सुख के बाद दुःख आने का क्रम है । परंन्तु दुःख आने पर लोंग घबडा जाते है । जो साम्यास्थिति को प्राप्त हो जाय वहीं संत पुस्ष है । संत की बाडी चरितार्थ होती है कि - यह भी समय निकल जायेगा । ऐसा जब जिसके जीवन में विचार आवे तो अवशा दुःख से निकल कर सुख के मार्ग खुल जायेंगे ।

अनु. पेईज नं. १७ से चालु

वह इष्टदेव हमारा है

अतः अपने सहजानंद स्वामी जैसा कोई गुरु नहीं तथा भगवान भी नहीं ।

इष्टदेव श्री सहजानंदस्वामी की महिमा का अंत नही है । जितना चाहे उतना पान कर सकते है ।

हम सबी बडभागी इस लिए हैं कि इतना चुस्त दुस्स्त सत्संग मिला है । श्री हरिका जहाँ प्रत्यक्ष दर्शन होता है ऐसे मंदिर तथा भगवान के अपर स्वस्म प. पू. आचार्य महाराज श्री एवं सन्त समुदाय । ऐसे सांगोपांग सत्संग से जुडा जबभी उत्सव का अवशर आये तब उसका लाभ अवश्य लेना चाहिए ।

अहमदाबाद श्री पुर शहर में अपने आंगन में २-४-०४ से ८-४-०४ तक प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री का षष्टि पूर्ति महोत्सव धूम धाम से सम्पन्न किया जायेगा । ऐसा अवशर बार-बार नहीं मिलता अपने ऋण से उन्नदष होने का यही अवशर है ।

संसार में बहुत सारे व्यवहार तो लगे ही रहते है । किन्तु यह शुभ प्संग कब मिलेगा ?

"थोडे में बहुत" की उक्ति जैसे भगवान स्वामिनारायण ने चरितार्थ की थी वैसे ही आज प. पूय आचार्य महाराजश्री द्वारा की जा रही है ।

श्री हरिके रस रसास्वाद करके उन्हीं की चाहना करती है ।

कोई कुछ भी कहे संशय विपर्यय का परित्याग करके एक निष्ट होकर परमात्माको पहचान कर यही हमारे इष्टदेव है अन्य नहीं यह भावना प्रगट करनी होगी ।

सत्संग समाचार

श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव धामधूम से सम्पन्न

भगवान स्वामिनारायण ने अहमदावाद में प्रथम मंन्दिर निर्माण कराकर अपने स्वरूप को नरनारायणदेव के रूप में प्रतिष्ठित किया था। इस भव्य इतिहास को १८२ वर्ष पूरे हो गये। फाल्गुन शुकल तृतीया २३-३-०४ के दिन पाटोत्सव के शुभदिन श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसाद जी महाराजश्री भावि आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पू.बाल लालजी महाराजश्री वडताल लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.१००८ श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री के हाथों से वेद विधि से अभिषेक किया गया यह इतिहास में पहली बार हुआ लोग धन्य भागी बने। गुजरात के गवर्नर श्री कैलाश पति मिश्रजी मन्दिर के आमंत्रण पर पधारे थे। पू. महंत शास्त्री स्वामी. निर्गुणदासजीने सभा संचालन करते हुए हिन्दी भाषा में देव महिमा के साथ दोनो गादी तथा गादिपतियो का माहात्म्य समझाया था। जेतलपुर के महन्त शास्त्री. स्वामी. आत्मप्रकाशदासजी ने षष्टिपूर्ति महोत्सव की महिमा बताई। वडताल मंदिर टेम्पल के चेरमेन स्वामी नौतमप्रकाशदासजी सुन्दर उदबोधन किये। वडताल के आचार्य श्री ने श्री नरनारायण देव की सुन्दर महिमा का वर्णन किया। अन्त में प.पू.आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजने अपनी अमृत मयी वाणी में शुभाशिर्वचन के साथ नरनारायणदेव की महिमा का गुण गान किया। पाटोत्सव के यजमान रणछोडभाई थे। मूली के उत्तमप्रिय स्वामी ने अन्नकूट में उत्तम सेवा की।

- को.ब्रह्मविहारी स्वामी

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर

प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से प. पू. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री नरनारायण यु. मं. तथा हरिभक्तों ने पौष शुक्ल १५ से माघ शुक्ल १५ तक माघस्नान करके पूर्णाहुति के निमित्त सन्त हरिभक्त जेतलपुर धोलका, धोलेरा देवों का दर्शन करके दरिया में गोपनाथ महादेव का दर्शन किया था।

-गोरधनभाई वी.सीतापरा

पंढरपुर (ता. कडी)

प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञासे प. पू. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में ता.१७-१-०४ से ता. ६-२-२००४ तक प्रतिदिन दो घन्टे स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गयी। इस प्रसंग पर जयदेव पुरा गुरुकुल से स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी उपस्थित थे।

-कोठारी लालजीभाई

मोटेरा में शाकोत्सव

प.पू. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा में भव्य शाकोत्सव सम्पन्न हुआ जिसमें प. पू. आचार्य महाराजश्री उपस्थित होकर सभी को दर्शन का लाभ दिये थे।

सभा में पूरव पटेल एवं कोटेश्वर गुरुकुल के बालको द्वारा धुन कीर्तन किया गया। स्वामी हरिकृष्णदास स्वामी पूर्णप्रकाशदास ने यथोचित प्रवचन किया।

प. पू. आचार्य महाराज श्री ने बघार करके श्री हरि की लीला का दर्शन करवाया। अन्त में अपना हार्दिक आशीर्वाद दिए। स्वामी देवप्रकाशदास एवं नाना पी.पी.स्वामी युवक मंडल के सहयोग से आगामी महोत्सव के लिए १५००००/- रुपये का भेंट प्राप्त किया गया।

-नरनारायणदेव.यु.मंडल

माणसा मंदिर

प. पू. आचार्य महाराजश्री तथा भावि आचार्य लालजी महाराज श्री के आशीर्वाद से तथा माणसा मंदिर के महंत एवं शास्त्री.स्वामी नारायणवल्लभदास की प्रेरणा से न.ना.यु.मं.के संचालक ईश्वरभाई पटेल के सहयोग से ता.११-१-०४ के दिन शाकोत्सव का आयोजन किया गया। प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों से शाकोत्सव सम्पन्न किया गया। अगल बगल के गांवो से हरिभक्त पधारे थे। हरिभक्तों की तरफसे षष्टि पूर्ति महोत्सव में भेंट की रकम लिखाई गयी थी।

प्रासंगिक सभा में उपस्थित संतो नें आगामी उत्सव की महिमा बतायी थी। अन्त में लालजी महाराजने सत्संग समाज को आशीर्वाद दिया था।

-चौधरी कांतिभाई बापुपुरा

बापूपुरा (माणसा मंदिर)

प. पू. लालजी महाराज के आशीर्वाद से गांव के युवावर्ग में सत्संग में काफी रुचि आयी है। युवानों ने व्यसन को तिलाजलि देकर दोनो समय मंदिर आने का संकल्प लिया। अगल बगल के गांवो में नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है।

उत्तरायण के दिन प्रातः ६ बजें बापुपुरा से माणसा मंदिर हरिभक्त बडे समूह के साथ पदयात्रा करके दर्शन का लाभ लिये। मंदिर के महंत राम स्वामी श्री वल्लभ स्वामी इत्यादि सन्तों ने कथा का सुन्दर लाभ दिया। गांव के हरिभक्त बडी संख्या में उपस्थित रहें। चौधरी कांन्तिभाई की प्रवृत्ति उत्तम है।

-कौ.चौधरी जशगंभाई

वहेलाल मंदिर

प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा धुन का आयोजन किया गया।

भाईओंने तथा बहनों ने ६०० नोटबुक माहामंत्र लिखकर पूर्ण की थी। ६० घन्टे की धुन भी सम्पन्न हुई। गांव के हरिभक्तो द्वारा सत्संग की कई प्रवृत्तियां की जा रही है। ता.२-२-०४ को महापूजा का आयोजन किया गया। जिसमें अहमदाबाद, निकोल, धमीज, कनीपुर, दहेगाम के हरिभक्तो ने भाग लिया। सन्तों ने पधार कर सभा की शोभा बढाई।

-गोरधनभाई सीतापुर

ईश्वरपुरा गांव में पू. लालजी महाराजश्री का पदार्पण

माघ शुक्ल एकादशी के दिन भक्तों के भाव को पूर्ण करने हेतु पू. लालजी महाराज पधारे थे। आगामी षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में सभी हरिभक्तों के घर पदार्पण करके पवित्र किये थे।

बाद में सायंकाल भव्य सभा का आयोजन किया गया था। यजमान श्री डी.एन.चौधरी के आमंत्रण पर प. पू. लालजी महाराजश्री भी सभा में पधारे थे। पूरव पटेल तथा दिनेश वघाशिया के कीर्तन के साथ सन्तों ने भी सुन्दर कथा कीर्तन किये थे। षष्टि पूर्ति के उपलक्ष्य में शास्त्री.स्वामी. हरिकृष्णदासजी, देवप्रकाशदासजी, स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी की प्रशंसासे सत्संग समाज की तरफ से १,७०,०००/- रुपये की सेवा की गयी थी।

प्रासंगिक सभा में लालजी महाराज ने

समस्त भक्त समाज को हार्दिक आशीर्वाद दिये। वहां से लालजी महाराजश्री वरसोडा तथा बदपुरा पधारकर ठाकुरजी की आरती किये।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में छोटे पी.पी.स्वामी का मार्गदर्शन था। गवाडा गांव में सत्संग सभा का आयोजन होता रहता है।

श्रीजी महाराज के प्रसादी भूत गांव में २४ वाँ वार्षिकोत्सव तथा षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में शाकोत्सव तथा रात्रि सभा का आयोजन किया गया। ६० घन्टे की धुनि भी की गयी।

प्रासंगिक सभा में छोटे पी. पी. शास्त्री. स्वामी हरिकृष्णदास, देव स्वामी तथा सूर्यप्रकाश कथा प्रवचन का सुन्दर लाभ दिया। *-नारायणभाई गवाडा*

आनन्दपुरा गांव में ज्ञान यज्ञ

आनन्दपुरा गांव में प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में प. भ. गोपालदास मोहनदास पटेल परिवार की तरफ से श्रीमद सत्संगी भूषण का पंचाहन पारायण का आयोजन किया गया था। प्रथम दिन ही प. पू. लालजी महाराज पदार्पण करके आशीर्वाद का लाभदिये थें। वक्तापद पर स्वामी रामकृष्णदासजी थे।

पू. शास्त्री. स्वामी हरिकृष्णदास, देवस्वामी, स्वामी नन्दकिशोरदास इत्यादि सन्तों की प्रेरणा सें षष्टि पूर्ति महोत्सव हेतु १७५०००/- समये को सेवा का नामांकन किया गया।

मुबारकपुरा में शाकोत्सव

गांन्धीनगर के पास मुबारकपुरा छोटा गांव है। वहाँ के हरिभक्तों में प. पू. आचार्य महाराज की षष्टि पूर्ति महोत्सव के निमित्त प. पू. लालजी महाराज को पदार्पण कराने की इच्छा थी। जिसमें इच्छापूर्ण करने हेतु लालजी महाराज शाकोत्सव के निमित्त पधारे। स्वयंशाक बघार करके प्रसंग को दिव्य भव्य बना दिये। सत्संग समाज आनन्दित हो गया। सन्तो ने कथा वार्ता का उत्तम लाभ दिया। *-कोठारी श्री*

षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में धोलका मंदिर में सभा

सर्वोपरिश्री मुरली मनोहरदेव हरिकृष्ण -महाराज के सांनिध्य में सर्वोपरि श्री हरिके छठ्ठे वंशज प. पू. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में भावि आचार्य लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में धोलका नगर तथा आस पास के गांवो में सत्संग सभायें की गयी।

विशाल सत्संग सभा में स्वामी घनश्यामप्रकाशदास (नारायणघाट) ने सभाका संचालन किया। सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी जेतलपुर के महंत स्वामी कांकरिया के महंत स्वामी जेतलपुरवाडी के हरिओं स्वामी आदि सन्तो ने षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में हरिभक्त समाज को तन-मन-धन से सेवा करने की अपील की। धोलका मंदिर के महंतने अगल बगल के गांवो के हरिभक्तो के सहयोग से ३००००० /- तीन लाख समये तथा १५०० मन गेहूं की सेवा करने का वचन दिलवाया। मुख्य सेवा करने वाले हरिभक्तों को पू. लालजी महाराजनें आशीर्वाद के साथ सन्मान किया। भलजन लालजी महाराज का दर्शन करके हरिभक्त खूब आनन्दित हुए। सन्तों की सेवा उत्तम थी। सभी हरिभक्त लोग मंदिर तथा हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी।

-श्री न.ना.यु.मं. धोलका

श्री नरनारायण का पाटोत्सव के १८२ पाटोत्सव के उपलक्ष्य में नेत्र रक्षा निदान केम्प

प. पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव के १८२ वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में २९-२-०४ रविवार प्रातः ९ बजे तक श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदाबाद में आखों के निदान हेतु केम्प का आयोजन किया गया था। डॉ. रमेशभाई परीख के मार्गदर्शन में शहर की नामांकिता डॉ. कुन्दनवहन गज्जर इलाज करके सेंकडो रोगियो का निदान किया।

स्वामिनारायण संस्कार धाम हाथीजण ता.२-२-०४ को डॉक्टरों ने विना मूल्य निदान करके सेवा भाव प्रदर्शित किया।

-डॉ. भाविनभाई परीख

नारायणपुरा मंदिर का १० वां पाटोत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा में श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव माघ शुक्ल दशमी के दिन महंत शास्त्री प्रेमस्वरूपदास की प्रेरणा से अ.नि. प्रभुदास उमेदभाई पटेल के परिवार समुदाय की तरफ से धूम धाम के साथ सम्पन्न किया गया। प्रातः ६ बजे वेद विधि से प. पू. लालजी महाराजश्री द्वारा केसराभिषेक किया गया।

यजमान परिवार पूज्य लालजी महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारे थे। इस सभा में कालूपुर मंदिर के महंत स्वामी, पू पी. पी. स्वामी, घनश्याम स्वामी, महंत प्रेमस्वरूपदासजी, यजमान परिवार की खूब प्रशंसा किये।

अन्त में प. पू. लालजी महाराजश्रीने यजमान के तीनपुत्रों का हार्दिक आशीर्वाद दिए। और उत्सव में धन अर्पण करने की प्रशंसाभी किये। *-कनुभाई पटेल*

कांकरिया मंदिर बालस्वरुप कंष्टभंजनदेव का १६५ वर्ष का पाटोत्सव

आदि आचार्य प .पू . ध. धु. आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज ने स्वयं अपने कुल देवता हनुमानदादा को आज से १६५ वर्ष पूर्व कांकरिया में प्रतिष्ठित किया था। जिसका पाटोत्सव फाल्गुन शुक्ल पंचमी प्रातः ६-३० बजे लालजी महाराज के हाथों से सम्पन्न किया गया।

इस प्रसंग पर कालूपुर मंदिर के महंत स्वामी जेतलपुर के महंत स्वामी जेतलपुर के विधार्थी सन्त, राजू स्वामी, गोलोक स्वामी इत्यादि सन्त पधारे थे। कष्टभंजनदेव के सामने हनुमानचालिसा पाठका आयोजन किया गया कांकरिया मंदिर के महंत की प्रेरणासे नरनारायणदेव युवक मंडलने खूब सेवा की। *-गौरांग पटेल*

नरोडा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री की श्री स्वामिनारायण मंत्र की धुन का आयोजन किया गया। ६० जनमंगलपाठ की पूर्णाहुति प. पू. महाराजश्री के निवास स्थान पर की गई। ता. ११-२-०४ पाठशाला के स्वामी हरिओंप्रकाशदास विधार्थी सन्त, ईश्वर स्वामी इत्यादिने षष्टि पूर्ति का हेतु समझाया।

-नवीनभाई आई.पटेल

मोरवासण श्री स्वामिनारायण मंदिर

भाइयों तथा बहनों के मंदिर में वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में प .पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प. भ. नवीनभाई के परिवार की तरफ से "श्रीमद शिक्षापत्रीभाष्य" का त्रि दिवसात्मक पारायण का आयोजन किया गया। ता. २-२-०४ से ता. ४-२-०४ तक शास्त्री नारायणवल्लभदासजी के वक्तापद पर हुआ।

वक्ता अभिषेक प्रसाददासजी थे ।

इस प्रसंग पर पू. लालजी महाराज श्री पधारे थे । उस समय गांव भर में भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया था । सभा संचालन विश्वप्रकाशदास ने किया ।

सोजागांव में सत्संगि भूषण सप्ताह

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में सोजा गांव के श्री नरनारायण ट्रान्सपोर्ट परिवार के शुभ संकल्प से ता.२९-१२-०३ पर ता. ४-१-०४ तक श्रीमद सत्संगीभूषण की कथा श्रीजी प्रकाश ने की । इस कथा में अगल बगल के गांवो के हरिभक्तों ने लाभ लिया । प्रातः ५ बजे सन्त भक्तों ने प्रभातफेरी निकाली । वहाँ के सत्संग में प्रेरणा मिले इस हेतुसे रात्रि में धुन कीर्तन का भी आयोजन किया गया । पूर्णाहुति के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री के पदार्पण पर खूब उत्सव मनाया गया । सभा में शास्त्री स्वामी हरिकृष्ण दासजी छोटे पी. पी., देव प्रकाश स्वामी, हरिचरणदासजी, पू.स्वामी राजेश्वरानन्दजी की प्रेरणा से षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में गुरुहेतु १० लाख रुपये की दान भेंट प्राप्त हुई । सभा में पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया । सन्त हरिभक्तो ने दर्शन कर धन्यता का अनुभव किया ।

साबरमती में शाकोत्सव

प. पू. आचार्य महाराजश्री की षष्टिपूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में साबरमती सत्संग समाज द्वारा ता. २४-१-०४ के दिन सहजानन्द गुरुकुल कोटेश्वर में शाकोत्सव मनाया गया । इस प्रसंग पर समाज के प्रत्येक जन लाभ लिए । गुरुकुल के बालको नें सुन्दर गीत गाकर वातावरणको मंत्र मुग्ध किया । सन्तो नें सुन्दर उपदेश दिये ।

छोटे पी. पी. का आयोजन बडा उत्तम रहा । *-नारायणभाई पटेल-कोठारी*

राजस्थान के गांवो में षष्टि पूर्ति महोत्सव के विषय में सन्तो का विचरण

परम पूज्य आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में लालजी महाराजश्री की आज्ञा से सन्तलोग गांवो में घूमकर सत्संग सुख देने हेतु विचरण करते है । अहमदाबाद के पू. महंत स्वामी जेतलपुर के पू. पी. पी. स्वामी, नारायणपुरा से पू. शास्त्री प्रेमस्वरूप स्वामी वाली मंदिर के सन्त गांव गांव सत्संग प्रचार किये । ता.२१-१-०४ से ता.२३-१-०४ तक सत्संग सभा का आयोजन किया गया । बाली मंदिर के महंत स्वामी बीलीया मंदिर के महंत स्वामी, राजस्थान के हरिभक्तो कों आचार्य महाराजश्री की महिमा समझाई । और सभी से षष्टिपूर्ति में गुरु ऋण चुकाने का अवशर आया है यह उपदेश किया । सन्तों की प्रेरणा से उत्सव में १५० जितने शुद्ध देशी घी के डब्बे को हरिभक्तों ने देनें को कहा । अभी वह सेवा चालू ही है । प. पू. महाराजश्री की आज्ञा से मारवाड के युवान हरिभक्त षष्टि पूर्ति महोत्सव में राजस्थानी वेषभूषा में सज्ज होकर सेवा करने का संकल्प लिया ।

थोबाउ, वाया, जेलाल, रट आदि गांवो में ६० घन्टे की धुन की गयी । वाया मंदिर में ता. १२-२-०४ के दिन पाटोत्सव मनाया गया । इस प्रसंग पर नारायणपुरा मंदिर के महंत स्वामी वाली मंदिर के महंत स्वामी ठाकुरजी की आरती उतार कर कथा वार्ता का लाभ दिया ।-*केवाराम वी. कृष्णकुमार*

माणेकपुरा

माणेकपुरा (ता. माणसा) श्री स्वामी नारायण मन्दिर में पूज्य लालजी महाराजश्री की आज्ञा से स्वा.श्रीजी प्रकाशदास की प्रेरणा से नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में प .पू. आचार्य महाराजश्री के हाथों से शाकोत्सव सम्पन्न हुआ । सन्त तथा हरिभक्त प्रसाद लेकर तथा प. पू. आचार्य महाराजश्री का दर्शन करके लोग धन्य हो गये ।

-चौधरी डाह्याभाई

बीलीया

प. पू. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सवके उपलक्ष्य में श्री हरि का पाटोत्सव ता.३-२-०४ के दिन पू. लालजी महाराजश्री के हाथों से सम्पन्न किया गया । सन्तों की प्रेरणा से उत्सव सम्पन्न हुआ ।

-कान्तिभाई पटेल

डांगरवा

(बांटा) डांगरवा वाट के श्री स्वामिनारायण मंदिर मे प. पू. आचार्य महाराज श्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में धनुर्मास में प्रातः धुनि का आयोजन किया गया था । पूर्णाहुति में ६० जितनें हरिभक्तोंने भाग लिया । महाराजश्री की प्रसन्नता हेतु मंत्रलेखन, स्तोत्रपाठ, माला जपने इत्यादि का नियम सभी ने लिया ।

-डाभी मकाजी सरदारजी

हिंमतनगर मंदिर

षष्टि पूर्ति महोत्सव का अनुलक्ष्य करके प. पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से महंत शास्त्री स्वामी आनन्दजीवन दासजी की प्रेरणासे श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा बडे हरिभक्तो द्वारा हिंमतनगर में ता.१५-२-०४ के दिन व्यसनमुक्ति की यात्रा का आयोजन किया गया । जिसमें व्यसन से हानि लाभ को बताया गया । मंदिर की सभा में महंत आनन्दस्वामी तथा हरिकृष्णदासजी ने षष्टि पूर्ति महोत्सवकी रूपरेखा समझायी इस अवशर पर जिन हरिभक्तों ने दान भेंट लिखाई थी उनका सन्मान पू. लालजी महाराज द्वारा पुष्प हार से किया गया । धारासभ्य रणजीत सिंह तथा नगरपालिका प्रमुख श्री जे.डी.पटेल उपस्थित होकर लाभ लिये थे ।

-महंत स्वामी हिंमतनगर

मेघाणीनगर मंदिर में षष्टि पूर्ति के उपलक्ष्य में कार्य क्रम

प. पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से नरनारायणदेव युवक मंडल तथा हरिभक्तों ने प. पू. लालजी महाराजश्री को १०८ घर में पदार्पण करवाया । महामंत्र के ६० घन्टे की धुन तथा जनमंगल पाठ का नीयम सभी ने लिया । वचनामृत, शिक्षापत्री के जयन्ती अवशर पर पाठ एकादशी के दिन हरिभक्तों के यहां सत्संग सभा । षष्टिपूर्ति महोत्सव का हार्ध समझाया गया और "संकल्प पदयात्रा" मेंधाणीनगर से अहमदाबाद मंदिर तक आयी । प. पू. अ. सौ. वहूजी की उपस्थिति में महिला शिबिर का भी आयोजन हुआ ।

-नरनारायणदेव युवक मंडल

प्रतापपुरा मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

प्रतापपुराश्री स्वामिनारायण मंदिर को २० वर्ष पूर्ण हुआ । प. पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.लालजी महाराजश्री की आज्ञा से पाटोत्सव का आयोजन शास्त्री स्वामी सिद्धेश्वरदासजी की प्रेरणासे किया गया । इस प्रसंग पर भागवत दशमस्कंध पंचाह पारायण, विष्णुयाग, महापूजा, विष्णु सहस्त्रनाम, जनमंगल पाठ, ६० घन्टे की महामंत्र धुन का आयोजन किया गया । स्वामी सिद्धेश्वरदासजी, शास्त्री हरिस्वरूपदासजी ने कथा का रसपान कराया । पूर्णाहुति के अवशर पर प .पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । ठाकुरजीकी आरती

उतारकर कथा की पूर्णाहुति की । समस्त सभा को आशीर्वाद दिया । रात्रि में युवाशिबिर के अवशर प.पू. लालजी महाराज पधारे । उस समय गांव के अगल बगल से युवानो नें भाग लिया और व्यसन मुक्ति का संकल्प लिया । अ.सौ. गादिवाळा के पदार्पण पर बहनों ने दर्शन तथा आशीर्वादका सुख प्राप्त किया । हरिभक्तों की सेवा सराहनीय रही । इस गांव की अहोभाग्य एक ही दिन सम्पूर्ण धर्मकुल पदार्पण किया ।

-चौधरी केशभाई तथा न.ना.यु.मं.

उंझा श्री स्वामिनारायण संस्कारधाम

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प. पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पंचवटी में षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में ६० घन्टे की धुन का आयोजन किया गया । यहाँ अलग स्थलो पर शास्त्री चन्द्रप्रकाशदास, शा. सिद्धेश्वरदास सत्संग सभा में कथा का आनन्द दिया । प्रति रविवार को एक घन्टे की बाल सभा का आयोजन किया जाता है । जिससे बालकों में सम्प्रदायिक की ज्ञान दृढ होता है । *-न.ना.यु.मं.)*

माधवगढ (प्रांतीजदेश)

प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १९-२-०४ को ठाकुरजी का पाटोत्सव मनाया गया । इस प्रसंग पर अहमदाबाद से छोटे पी. पी. स्वामी, देवप्रकाशस्वामी, ब्र.राजेश्वरानंदजी, बालस्वरूप स्वामी, इत्यादि संत ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में आगामी षष्टि पूर्ति का रहस्य समझाये थे ।

-चिमनभाई पटेल

लसुन्द्रा

श्री हरि के दिव्य चरणों से अंकित

श्री हरि के चरणों से अंकित लसुन्द्रा गांव में ता. ७-२-०४ को प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री ने मंदिर में आरती उतार कर प. भ. अंबालाल सोमाभाई के नये मकान की वास्तुपूजा की आरती किये थे बाद में सभा में पधारे थे । यजमान ने महाराजश्री की आरती तथा पूजा की । सभा शास्त्री हरिकृष्णदासको ठारी सत्यप्रकाशदास, शास्त्री सिद्धेश्वरदास षष्टि पूर्ति महोत्सव से सम्बन्धित चर्चा की । बाद में महाराजश्री ने यजमान को आन्तरिक आशीर्वाद दिया । स्वामी राजेन्द्रप्रसाददास की प्रेरणा से कार्यक्रम अच्छी तरह सम्पन्न हुआ धर्म स्वरूपदासजी रामचरणदासजी, शा.गोलोकविहारीदासजी, स्वा. आनन्ददासजी सभी सन्त इस सभा में उपस्थित थे । *-शा. स्वा. छपैयाप्रसाददासजी*

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

धांगध्रा

प.पू.ध.धु .आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में सांख्ययोगी कंचन बा नं ६० जितनी सत्संगी बहनों को साथ लेकर ध्रांगध्रासे मूली तक पदयात्रा का आयोजन किया । हळवद बहनों के मंदिर से (साठ) बाल चरित्र वचनामृत पारायण तथा ६० घन्टे की धुन की गयी । सुरेन्द्रनगर तथा जोरावर नगरकी सांख्ययोगी बहनो ने तथा सन्त स्वामी रामकृष्णदास स्वामी भक्तिहरिदास इत्यादि सन्तों ने गांव में घूमकर सत्संग की खूब प्रवृत्ति को बढाया ।

हरिपरा

ता.१९-२-०४ के दिन ६० हरिभक्तों ने अहमदाबादा प. पू. आचार्य महाराजश्री के निवास स्थान पर षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में पद यात्रा का आयोजन किया गया । इसमें कांनजी भगत, रमणीक भगत सभी को प्रेरणा किये थे ।

-अनीलभाई दुधरेजिया

लारवाजी का गांव (धांगध्रा)

इस गांव के स्वामीनारायण मंदिर में षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी रामकृष्णदास श्रीमद सत्संगीजीवन कथा का लाभ दिया । मूली से विष्णुचरणदासजी ने सुन्दर आयोजन किया था । ता. १२-२-०४ के दिन प. पू. आचार्य महाराजश्री ने ठाकुरजीकी आरती उतार कर सभी को आशीर्वाद दिये थे ।

धांगध्रा नरसीपरा

प. पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नरसीपरा में "व्रजेन्द्र विधाविहार" प्राथमिक शाला महंत स्वामी श्रीजी प्रकाशदासजी तथा सन्तो की प्रेरणा से कक्षा १ से ७ तक अभ्यास कर रहे है । १५० जितने विधार्थियों के अभ्यास तथा उत्तम व्यवस्था देखकर महाराजश्री ने सभी को आशीर्वाद दिया । शास्त्री घनश्यामदासजी शाला का संचालन करते हैं । *-अनिलभाई दुधरेजिया*

घनश्यामनगर (नवा धनाणा ता. हळवद) प. पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में इस गांव में ता. २३-२-२००४ से ता. २७-२-०४ तक श्रीमद सत्संगीजीवन के पारायण का आयोजन किया गया । कथावाचक धर्मवल्लभदासजी तथा विश्वविहारीदासजी थे । प.भ. मुलजीभाई यजमान पद का लाभ लिये । भक्तिविहारीदास ने सभा संचालन किया । नरनारायण युवक मं की सेवा प्रशंसनीय थी । *-गोरधनभाई*

वांकानेर में ६० घन्टे की धुन

षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में प. पू. अ. सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री की आज्ञा से बहनों के मंदिर में कर्मयोगी तथा सांख्ययोगी बहनों ने मिलकर ६० घन्टे की धुन की थी । *-भावना पाटडिया*

नटवरगढ (ता- लीबडी) में मूर्ति प्रतिष्ठा

गुजरात में विनाशकारी भूकंम्प में यह गांव तथा मंदिर सम्पूर्ण नष्ट हो गया था । जिससे प.पू. आचार्य महाराजश्रीने पुनःनिर्माण का उत्तरदायित्क महंत कृष्णप्रसाददासजी को सौंपदिया था जिसमेंपरमेश्वरदासजी,वासुदेवचरणदासजी, केशवजीवनदासजी, अखिलेश्वर दासजी, नथु भगत, महादेव भगत इत्यादि सन्त पार्षदो ने हरिभक्तो को प्रेरणा देकर सेवा कराये थे । मंदिर की प्रतिष्ठा के निमित्त ता. १५-२-०४ से ता. १७-२-०४ तक श्रीमद भागवत दश स्कन्ध का त्रिदिनात्मक पारायण श्रीजी प्रकाशदास के वक्ता पदपर किया गया । ता. १७-२-०४ के दिन पू. आचार्य महाराजश्री के हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा की गयी । इस प्रसंग पर संतो ने प्रासंगिक प्रवचन किया । अन्त में महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया । छपैयाप्रसादने सभा संचालन किया । गांव के तथा बाहर से आये हरिभक्तों ने सेवा का अलौकिक लाभ लिया ।

-शास्त्री .स्वामी. आनन्दजीवनदासजी

षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में

६० गांवो में धुन का आयोजन

प.पू.लालजी महाराजश्री की आज्ञा से प. पू. आचार्य महाराजश्री के षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में मूली देश के गांवो में एक युवा शिबिर का आयोजन किया गया । जिसमें लालजी महाराजने सभी सन्त हरिभक्तों को षष्टि पूर्ति के उपलक्ष्य में नाना कार्यक्रमों को करने की आज्ञा की, सभी ने स्वीकार करके ६० घन्टे की धुन का

आयोजन किया । बडे बडे १५ गांवो में लालजी महाराजश्री पदार्पण किये सम्पूर्ण आयोजन कृष्ण वल्लभदासजी ने किया ।

नीचे के गांवो में पूर्णाहुति सम्पन्न हुई

ता. ३१-१२-२००३ बलदाणा-पू. लालजी महाराजश्री के हाथों से

ता. १-१-०४को हरिपट संत मंडल द्वारा ।

ता. ३-१-०४ रतनपर (जूनुं) धोबी, मेथाग, ईश्वरनगर टींबा धूलकोट, जूना देवळिया ।

ता. ४-९-०४ टीकर मकानसर संतो द्वारा :

ता. ५-१-०४ जूना धोटीला संतो द्वारा

ता. ६-१-०४ खारवा, जासपर, सन्तो द्वारा

ता. ८-१-०४ भेराडा, कुंतलपुर संतो द्वारा

ता. ९-१-०४ मेमका, लोलापर, लखतर पू. लालजी महाराज के हाथों से ।

ता. १०-१-०४ खेराली संतो द्वारा ।

ता. ११-१-०४ जसापर (धांगध्रा) तथा कलोल सन्त द्वारा ।

ता. १२-१-०४ शियाळी, भक्तिनगर इत्यादि में लालजी महाराजके हाथो से ।

ता. १३-१-०४ अखियाणा, रामगढ सन्तो द्वारा

ता. १४-१-०४ लुणासर, भदेशी, देवळियास इत्यादि में संतो द्वारा

ता. १५-१-०४ चुंडा सरा सन्तो द्वारा

ता. १७-१-०४ रतनपर मंदिर भराडा लालजी महाराजश्री सन्तो द्वारा

ता. १८-१-०४ सुरेन्द्रनगर मंदिर सन्तो द्वारा ।

ता. २१-१-०४ रणगीतनगर, जेतपर लालजी महाराजश्री द्वारा ।

ता. २२-१-०४ धांगध्रा मंदिर सन्तो द्वारा ।

ता. २३-१-०४ वरसाणी संतो द्वारा ।

ता. ३०-१-०४ रामपरा, गुंदीवाला, खोलडीवाद लालजी महाराज श्री द्वारा

इसके उपरान्त अन्य गांवो में धुन का आयोजन किया गया । इस प्रसंग पर नाना मंदिरो के सन्त महंतभी भागलिये थे ।

- शैलेन्द्रसिंह

पाटडी श्री स्वामिनारायण मंदिर

बहनों के श्री स्वामिनारायण मंदिर में माधशुक्ल पक्ष एकादशी को पांचवां पाटोत्सव के प्रसंग पर विष्णुयाग रतीलाल खुशालदास के यजमान पद पर तथा पाटोत्सव अभिषेक अन्नकूट इत्यादि का सांख्ययोगी शांता बा की तरफ से जो सेवा भेंट षष्टी पूर्ति हेतु आयी थी वह लालजी महाराजश्री के चरणों में अर्पण की गयी । अन्त में लालजी महाराजने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया । षष्टि पूर्ति के उपलक्ष्य में भाइ तथा बहनों के मंदिरो में ४२ घन्टें की धुन हुई । शिक्षापत्री वचनामृत परायण एकादशी, पूनम तथा अमावस्या को धुन एवं समूह में प्रभातफेरी का आयोजन किया गया ।

-नारायणसिंह परमार

विदेश सत्संग वृत्तान्त

सोल एंजलस मंदिर में तीसरा पाटोत्सव किया गया

न्यॉर्क एल.ए. श्री स्वामिनारायण मंदिर में प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री तथा प. पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तृतीय पाटोत्सव का आयोजन किया गया ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद सत्संगीजीवन सप्ताह पारायण प. पू. लालजी महाराज की निश्रा में ता. १४-१२-०३ से ता. २१-१२-०३ तक शास्त्री सूर्यप्रकाशदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ । शास्त्री पूर्णप्रकाशदासजी, शन्तीप्रकाशदासजीनरनारायणप्रसाददासजी ने प्रसंगोचित प्रवचन करके हरिभक्तों को प्रसन्न किया । प. पू. लालजी महाराजश्री सभी को अन्त में आशीर्वाद दिये । युवानों को उत्साहित करने हेतु रात्रि में दांडियारास भी किये थें । ठाकुरजी की सेवा मन कृष्णदासजी ने किया । कमला बहन ईश्वरभाई पटेल यजमान थी । आनंदीबहन नटवरलाल पाटोत्सव के यजमान थी । लीलाबहन जयन्तीलाल अन्नकूट की यजमान थी । अभिषेक में योगेन्द्रभाई शास्त्री ने भाग लिया । नटुभाई तथा जयंतीभाई ने संपूर्ण व्यवस्था की थी । तथा अन्य हरिभक्तजन प.पू. लालजी महाराज की सेवा करके प्रसन्नता प्राप्त की । संजय पटेल के सहकार से वेब साइड पर प्रसारण किया गया ।

-रसिक चौधरी

बुवी मेरीलेन्ड (वोशिंग्टन चेप्टर)

७ फरवरी शनिवार की साम को ३ बजे ठाकुरजी के सामने धुन कीर्तन, वचनामृत पढन, आरती, इत्यादिभाई तथा बहन सभी उपस्थित रहकर लाभ लिए । प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग सुव्यवस्थितचल रहा है ।

-कनुभाई पटेल

अक्षरनिवासी संत - हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अमदावाद-श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के स. गु. गोविन्दप्रसाददासजी, गु. शा. स्वा. अक्षर निवासी हुए ।

पीराणा-(ता. दशक्रोई) प. भ. आशाभाई मथुरभाई पटेल ता. ५-२-०४ के दिन श्री हरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

धांगधा-श्री स्वामिनारायण मंदिर में सेवा पूजा करते हुए सांख्ययोगी गौरी बा श्री हरिका स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुई है । (ता. ९-१-०३)

अमदावाद-प. भ. अमरतलाल पुंजीराम परमार ता. २८-१-०४ के दिन श्री हरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए है ।

डेमाई-वयोवृद्ध सत्संगी प.भ. रणछोडभाई धर्माभाई पटेल ९४ वर्ष की उम्र में ता. २५-१-०३ के दिन श्री हरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए है ।

अमदावाद-प. भ. सोनी भीखालाल दामोदरदास ता. २१-२-०४ के दिन श्री हरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए है ।

हाथपालिया-प. भ. लखभाई लाखुभाई पटेल ता. ९-२-०४ के दिन श्री हरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए है ।

मनेन्द्रगढ-प. भ. मगनलाल देवजीभाई श्री हरिका स्मरण करते हुए ता. १२-२-०४ के दिन अक्षरनिवासी हुए है ।

अमदावाद-श्री गणपतिजी श्री हनुमानजी के पुजारी पार्षदबाबू भगत के पिताश्री प. भ. मथुरभाई अपरशीभाई ९५ वर्ष की उम्र में श्री हरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुई है ।

महेसाणा-श्री मिनेषभाई के.मोदी की दादी मां प. भ. अमजी बा (९४ वर्ष) ता. ११-२-०४ के दिन श्री हरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

कनीपुर - प.भ. हर्षदभाई पटेल (अमदावाद मंदिर स्टोर किपर) के पिताश्री प. भ. भलाभाई ईश्वरभाई पटेल ता. १-३-२००४ के दिन श्री हरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए है ।

॥ श्री स्वामिनारायणाय नमः ॥

तव मूर्तिरियम् सुस्वास्थ्ये जनतायाः किल ताप शान्तये ।
मरणस्य जयाय नित्यदा नरनारायणदेव पाहिमाम् ॥

॥ निमंत्रण ॥

प. भ. श्री.

अनंतकोटि ब्रह्मांडना अधिपति सर्वावतारी परब्रह्म परमात्मा पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण स्वस्वरूपे रहीने स्वहस्ते स्थापेल ब्रह्मपीठ भगवान श्री नरनारायण देवनी प्रसन्न कृपाथी समग्र संप्रदायना वडा धर्म गुरु-आचार्य स्थाने विराजमान भगवान श्री स्वामिनारायणना छठ्ठा वंशज परम पूज्य धर्म धुरंधर आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पोताना जीवनकाळना ७० वर्ष पूरा करतां होय तेओश्रीनो षष्ठीपूर्ति महोत्सव अति धामधूमथी भव्यातिभव्य रीते उजवववामां आवनार छे. ॥

विक्रम संवत २०६०ना चैत्र सुद १२ थी चैत्र वद ३ ता. बीजी एप्रील २००४ ने शुक्रवार थी ता. आठमी एप्रील २००४ने गुरुवार दरम्यान समग्र संप्रदायना विद्वान संतो, सांख्य योगी ब्रह्मनो, सत्संगीओ हरिभक्तो तेमज धर्मप्रेमी जनता तरफथी गुरु-ऋण अदा करवा माटे पूर्ण भक्तिभावथी श्री नरनारायणदेव देश गादी अमदावादना भावि आचार्य श्री प.पू. १०८ श्री लालजी महाराज श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीना वडपणा हेठळ उजवाशे. ॥

आ महा महोत्सव दरम्यान अनेक हरिभक्त वर्धक धार्मिक कार्यक्रमोना आयोजन द्वारा धर्मलाभ प्राप्त थशे. ॥

आ अलौकिक दिव्य अवसर द्वारा प्राप्य संचितनिधि द्रव्यमांथी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीना शुभ संकल्प प्रमाणे श्री हरिनी अंगभूत प्रसादीनी वस्तुओनुं भव्य दर्शनीय संग्रहालय साकार करवामां आवशे. ॥

सांप्रतकाळना श्रेष्ठ सेवा आ दिव्य अलौकिक महामहोत्सव प्रसंगे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तरफ पोतानी श्रध्धा भक्ति अने प्रेमनी कृतघ्न भावना प्रदर्शीत करी प.पू. महाराजश्रीनो राजीपो मेळववा आ अमूल्य अवसरना साक्षी रुप अनी श्री हरिनी कृपाने पात्र अनी कृतार्थ थई पुण्य लाभ लेवा सपरिवार उपस्थित रहेवा निमंत्रण....

महोत्सव स्थळ
श्री स्वामिनारायण नगर
गुजरात युनि. ग्राउन्ड
ड्राईवईन रोड अमदावाद

षष्ठीपूर्ति महोत्सव समिती वती
लि.
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
महंत, श्री स्वामिनारायण मंदिर
अमदावाद

યજમાનશ્રીઓ

• મહોત્સવના મુખ્ય યજમાનશ્રી

પ.ભ. અ.નિ. રણછોડલાલ જેઠાલાલ મારફતીયા પરિવાર (જોરણંગવાળા) (હાલ યુ.એસ.એ.)
હ. પ.ભ. શ્રી રમેશભાઈ રણછોડલાલ મારફતીયા ● પ.ભ. શ્રી નવિનચંદ્ર રણછોડલાલ મારફતીયા
પ.ભ. શ્રી નિલેશ રમેશભાઈ મારફતીયા ● પ.ભ. શ્રી પ્રજ્ઞેશ રમેશભાઈ મારફતીયા
પ.ભ. શ્રી જ્ઞાનેશ રમેશભાઈ મારફતીયા ● પ.ભ. કૃણાલ નવિનચંદ્ર મારફતીયા ● નિશ, નિલેશ / તેજ, પ્રજ્ઞેશ

પ્લેટીનમતુલા વિધિના મુખ્ય યજમાનશ્રી

પૂજ્ય સ.ગુ. ધ્યાની સ્વામી શ્રીહરિસ્વરૂપદાસજીના શિષ્ય મંડળના ભક્તો સ્વા. મંદિર (ગાંધીનગર સે.-૨)

મહોત્સવના સહ યજમાનશ્રીઓ

પ.ભ. શ્રી નટુભાઈ સારાભાઈ પટેલ ગામડીવાળા (યુ.એસ.એ.) હ. પ.ભ. શ્રી પંકજભાઈ નટુભાઈ પટેલ
પ.ભ. શ્રી રશ્મિનટુભાઈ પટેલ, પ.ભ. જનકભાઈ વિનુભાઈ પટેલ ● પ.ભ. શ્રી જયંતિભાઈ અંબાલાલભાઈ પટેલ (મોખાસણવાળા) (નેશનલ ટાંકીવાળા) ● પ.ભ. શ્રી ભીખાભાઈ વિહાભાઈ પટેલ (ડાંગરવાવાળા) (યુ.એસ.એ.) ● પ.ભ. શ્રી અરવિંદભાઈ મફતલાલ પટેલ (ડાંગરવાવાળા) (યુ.એસ.એ.)

જ્ઞાનયજ્ઞ પારાયણના મુખ્ય યજમાનશ્રી

પ.ભ શ્રી રસિકભાઈ અંબાલાલ (દવાવાળા મોખાસણવાળા) (યુ.એસ.એ.)
હ. પ.ભ. જયેશ રસિકલાલ પટેલ, સંજય રસિકલાલ પટેલ

જ્ઞાનયજ્ઞ પારાયણના સહ યજમાનશ્રીઓ

અ.નિ. પ.ભ. શ્રી મણીલાલ લક્ષ્મીદાસ ભાલજા સાહેબના ગુણાનુંરાગી (હસ્તે અ.નિ. પ.ભ. જેઠાલાલ પોપટલાલ ઝીંઝુવાડીયા તથા અ.નિ. પ.ભ. સોની કસ્તુરચંદ પોપટલાલ ઝીંઝુવાડીયા પરિવાર) (હસ્તે પ.ભ. કનૈયાલાલ તથા મણીલાલ તથા પ.ભ. ડૉ. હર્ષદભાઈ તથા પ.ભ. શાંતિભાઈ હળવદવાળા-અમદાવાદ)
પ.ભ. શ્રી દ્વારકાદાસ કચરદાસ પટેલ આંગડીયા (વિહારવાળા હાલ અમદાવાદ) હસ્તે. પ.ભ. જીતુભાઈ દ્વારકાદાસ પટેલ
પ.ભ. શ્રી ડૉ. કનુભાઈ એસ. પટેલ (બાપુનગર - અમદાવાદ) અને શ્રી વિધિ કન્સ્ટ્રકશન (હ. પ.ભ. જેરામભાઈ છગનભાઈ કાનાણી તથા પ.ભ. ભગવાનભાઈ છગનભાઈ કાનાણી (પાંદરીવાળા) (હાલ બાપુનગર - અમદાવાદ) પ.ભ. શ્રી હિતેશભાઈ પરબતભાઈ ભુડીયા કેરા કચ્છ (હાલ ઓલ્ડહામ - યુ.કે.) (હ. પ.ભ. જયશ્રીબેન દિનેશભાઈ ભુડીયા, પ.ભ. પરેશભાઈ, પ.ભ. પ્રિતેશભાઈ, પ.ભ. મિનેશભાઈ

મહાવિષ્ણુયાગ (હરિયાગ)ના મુખ્ય યજમાન

પ.ભ. અ.નિ. પટેલ કચરદાસ મગનદાસ પરિવાર (ડાંગરવાવાળા) (હાલ યુ.એસ.એ.) (હ. પ.ભ. જયંતિભાઈ કચરદાસ પટેલ, પ.ભ. રમણભાઈ કચરદાસ પટેલ, પ.ભ. અરવિંદભાઈ કચરદાસ પટેલ તથા પ.ભ. મનોજભાઈ જયંતિભાઈ પટેલ

મહાવિષ્ણુયાગ (હરિયાગ)ના સહ યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી બાબુભાઈ પી. પટેલ (મોખાસણવાળા) (યુ.એસ.એ.) ● પ.ભ. શ્રી શંકરલાલ વેણીદાસ પટેલ (મોખાસણવાળા) (યુ.એસ.એ.) (હ. પ.ભ. પ્રવિણભાઈ તથા પ.ભ. ઘનશ્યામભાઈ) ● કૃષ્ણા માર્કેટીંગ (ગં.સ્વ. સવિતાબેન લાલજીભાઈ તથા પ.ભ. રાકેશભાઈ લાલજીભાઈ) ● પ.ભ. ઘનશ્યામભાઈ મણીલાલ પટેલ (મોખાસણવાળા) (હાલ યુ.એસ.એ.)

ભોજનદાનના મુખ્ય યજમાનશ્રી

શ્રી લક્ષ્મણભાઈ કન્સ્ટ્રકશન કું. (હ. પ.ભ. લક્ષ્મણભાઈ ભીમજી રાઘવાણી, પ.ભ. પ્રેમજીભાઈ કેશરા રાઘવાણી તથા પ.ભ. કાનજીભાઈ ભીમજી રાઘવાણી (બળદીયા કચ્છવાળા) (હાલ નાઈરોબી).

મહામંત્ર લેખન હોમના મુખ્ય યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી દશરથભાઈ પ્રહલાદભાઈ પટેલ (સ્કીમ કમિટી સભ્યશ્રી) તથા પ.ભ. રમેશભાઈ તથા પ.ભ. પ્રકાશભાઈ, અમદાવાદ.

મહામંત્ર લેખન હોમના સહ યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી કરશનભાઈ ધનજીભાઈ ભગત પરિવાર (રવાપર કચ્છવાળા હાલ મોરબી) (હસ્તે પ.ભ. હરિભાઈ તથા પ.ભ. લાલજીભાઈ તથા પ.ભ. તુલસીભાઈ) ● પ.ભ. બળદેવભાઈ સોમદાસ પટેલ (મોખાસણ) (હાલ યુ.એસ.એ.) ● પ.ભ. અશોકભાઈ રમણભાઈ પટેલ (મોખાસણ) (હાલ યુ.એસ.એ.) ● પ.ભ. કાંતિભાઈ ભગવાનભાઈ પટેલ (મોખાસણ) (હાલ યુ.એસ.એ.)

અખંડધૂનના મુખ્ય યજમાનશ્રી

પ.ભ.અ.નિ. શેઠશ્રી છોટાલાલ મગનલાલ પટેલ (કડીવાળા) (યુ.એસ.એ.) ● હરિકૃષ્ણ સી. પટેલ અમરીષ સી. પટેલ

અખંડધૂનના સહ યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી જશવંતભાઈ બચુભાઈ ગોકળદાસ પટેલ (કરજીસણ) ● પ.ભ. શ્રી સુરેશભાઈ હિરદાસ પટેલ (મોખાસણ) ● પ.ભ. શ્રી અરવિંદભાઈ મણીલાલ પટેલ ● પ.ભ. શ્રી વિઠ્ઠલભાઈ પોચાલાલ પટેલ મોખાસણ ● પ.ભ. શ્રી નટવરભાઈ બી. પટેલ લસુન્દ્રા ● શ્રી ભક્તિ મહિલા મંડળ હ્યુસ્ટન (યુ.એસ.એ.)

સંત મહાદીક્ષાના મુખ્ય યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી બીમલ સી. પારેખ - પ.ભ. પ્રવિણચંદ્ર સી. પારેખ (મહારાષ્ટ્ર) (હાલ યુ.એસ.એ.)

ધર્મકુળ પૂજનના મુખ્ય યજમાનશ્રી

પ.ભ. અ.નિ. નાથજીભાઈ ઈચ્છારામ શુકલ તથા પ.ભ. અ.નિ. ઈશ્વરલાલ લાભશંકર પંડ્યાના શિષ્ય સમુદાય

શ્રી નરનારાયણાદિદેવોના કેસરાભિષેક તથા છપ્પનભોગ અન્નકૂટના મુખ્ય યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી કાંતિભાઈ જોઈતારામભાઈ પટેલ (વિહારવાળા) અમદાવાદ
(ઘનશ્યામ કન્સ્ટ્રકશન) હ. પ.ભ. દિનેશકુમાર, પ.ભ. જયેશકુમાર, પ.ભ. નિલેશકુમાર

સમૂહમહાપૂજાના મુખ્ય યજમાનશ્રી

અ.નિ. પ.ભ. શ્રી મણીલાલ લક્ષ્મીદાસ ભાલજા સાહેબના હેતરૂચીવાળા હરિભક્તોના મંડળ તરફથી
હસ્તે પ.ભ. શ્રી નંદલાલભાઈ કોઠારી - અમદાવાદ

સમૂહમહાપૂજાના સહ યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી રાજુભાઈ ભક્તિભાઈ પટેલ (વડુવાળા) (હાલ યુ.એસ.એ.) ● પ.ભ. શ્રી રમણલાલ કાંતિલાલ પટેલ (રાજપુર) ● પ.ભ. શ્રી રાજેશભાઈ બાબુલાલ અંબાલાલ (મોખાસણ) ● પ.ભ. શ્રી મુકેશભાઈ તથા પ.ભ. શ્રી મહેશભાઈ કાંતિભાઈ (ડાંગરવા) ● પ.ભ. શ્રી હીરાબેન નટુભાઈ સોમદાસ પટેલ (વડુ) ● પ.ભ. શ્રી અનિલભાઈ અમૃતભાઈ પટેલ (ડાંગરવા)

બાલ સ્વરૂપશ્રી ઘનશ્યામ મહારાજના કેશરાભિષેક તથા છપ્પન ભોગના અન્નકૂટના મુખ્ય યજમાનશ્રી (હરિ જયંતી-રામનવમીના દિને)

પ.ભ. શ્રી નાનજી રામજી હીરાણી (હસ્તે પ.ભ. મિતીન નાનજીભાઈ હીરાણી કચ્છવાળા હાલ લંડન)

સંત પૂજનના મુખ્ય યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી રસિકભાઈ દયાળજીભાઈ સોની (સીતાપુરવાળા અમદાવાદ)

સંત પૂજનના સહ યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી નટુભાઈ ગોરધનભાઈ પટેલ (કાંકરિયા-અમદાવાદ) ● પ.ભ. શ્રી કાનભાઈ વેણીદાસ પટેલ (મોખાસણ) ● પ.ભ. શ્રી અશ્વિનભાઈ પ્રહલાદભાઈ પટેલ (રાજપુર) ● પ.ભ. શ્રી જયેશભાઈ એ. પટેલ

શોભાયાત્રાના મુખ્ય યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી ગોવિંદભાઈ શંકરદાસ પટેલ (મોખાસણવાળા) (હાલ યુ.એસ.એ.) (હ. પ.ભ. શૈલેષભાઈ તથા પ.ભ. નવિનભાઈ)

શોભાયાત્રાના સહ યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી નાથાભાઈ જીવીદાસ પટેલ (મોખાસણવાળા) (હ. પ.ભ. અરવિંદભાઈ તથા પ.ભ. શૈલેષભાઈ) ● પ.ભ. શ્રી ડાહ્યાલાલ જોઈતારામ (કરજીસણવાળા) (હ. પ.ભ. રૌમિક તથા પ.ભ. ભીખાલાલ) ● પ.ભ. શ્રી રામાભાઈ આત્મારામ પટેલ (ડાંગરવાવાળા) ● પ.ભ. ડાહ્યાભાઈ મણીલાલ પટેલ (મોખાસણવાળા) (હ. પ.ભ. વિનોદભાઈ તથા પ.ભ. પંકજભાઈ)

બ્રાહ્મણ બટુકોને યજ્ઞોપવિતના મુખ્ય યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી બાબુભાઈ મણીલાલ શાહ (પ્રાંતીજવાળા અમદાવાદ) (હસ્તે સુપુત્રો પ.ભ. શરદભાઈ, પ.ભ. અશ્વિનભાઈ, પ.ભ. ભરતભાઈ, પ.ભ. કમલેશભાઈ)

બ્રાહ્મણ બટુકોને યજ્ઞોપવિતના સહ યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી ધીરૂભાઈ જીવરાજભાઈ સોરઠીયા તથા પ.ભ. પરસોતમભાઈ હીરજીભાઈ ● પ.ભ. શ્રી પ્રહલાદભાઈ જોઈતનદાસ પટેલ (મોખાસણવાળા) ● પ.ભ. શ્રી રમણલાલ સોમદાસ પટેલ (મોખાસણવાળા) ● પ.ભ. શ્રી ઈશ્વરદાસ બોધીદાસ પટેલ (મોખાસણવાળા) ● (હસ્તે પ.ભ. રમણભાઈ તથા પ.ભ. ગોવિંદભાઈ તથા પ.ભ. ભગવતભાઈ)

પ્રદર્શનના મુખ્ય યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી વિઠ્ઠલભાઈ શીવરામભાઈ પટેલ (વિશાલ ઓર્ગેનાઈઝવાળા અમદાવાદ)
તથા પ.ભ. સકરચંદભાઈ છગનભઈ પટેલ (સુપર માર્બલવાળા વિહારવાળા) (હાલ અમદાવાદ)

પ્રદર્શનના સહ યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી મગનભાઈ પરસોત્તમભાઈ લહેરી ● પ.ભ. શ્રી નરસીભાઈ નસીત તથા પ.ભ. અરવિંદભાઈ દોંગા ● પ.ભ. શ્રી રમેશભાઈ જી. કાછડીયા

જનરેટર સેટદાનના મુખ્ય યજમાનશ્રી

શ્રીહરિ ડાયમંડ (હસ્તે પ.ભ. ભનુભાઈ નાનજીભાઈ સુહાગીયા - બાપુનગર) (યુ.એસ.એ.)

આમંત્રણ પત્રિકાના યજમાનશ્રી

પ.ભ. ગોવિંદભાઈ બી. ગજજર ● પ.ભ. રમણભાઈ બી. ગજજર ● પ.ભ. ચીમનભાઈ બી. ગજજર ● પ.ભ. રસિકભાઈ બી. ગજજર ● પ.ભ. ચંદ્રકાંતભાઈ બી. ગજજર.

એક દિવસના રસોઈના યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી નારાયણભાઈ બેચરદાસ પટેલ (ડાંગરવાવાળા) (યુ.એસ.એ.) ● ગોમતીબેન બાબુલાલ પટેલ કોઠાવાળા (યુ.એસ.એ.) (હસ્તે પ.ભ. અરવિંદભાઈ બી. પટેલ) ● પ.ભ. શ્રી ભીમજીભાઈ ટાંક - દુબઈ ● ગં.સ્વ. શ્રી કસ્તુરબેન દેવજીભાઈ ટાંક (હસ્તે પ.ભ. ભીમજીભાઈ દેવજીભાઈ ટાંક બોડકાવાળા હાલાર) (હાલ દુબઈ) ● સમીર સિન્થેટીક મિલ્સ (હસ્તે પ.ભ. નટવરલાલ સોમાભાઈ પટેલ પરિવાર તથા પ.ભ. જસંવતલાલ ચુનીલાલ પટેલ પરિવાર (કુબડથલવાળા હાલ અમદાવાદ) ● પ.ભ. અ.નિ. કાળીદાસભાઈ નરસીભાઈ પટેલ (ગુલાબપુરાવાળા) (હસ્તે પ.ભ. ગાંડાભાઈ, પ.ભ. અમૃતભાઈ, પ.ભ. વિષ્ણુભાઈ) ● પ.ભ. શ્રી ગોવિંદભાઈ રામદાસ પટેલ, ડાંગરવાવાળા

છેલ્લા દિવસની રસોઈના તથા સંતોના ધોતીયાના યજમાનશ્રી

પ.ભ. શ્રી પ્રકાશભાઈ રતિભાઈ પટેલ તથા અ.સૌ. અરૂણાબેન પ્રકાશભાઈ પટેલ (હ. પ.ભ. તેજસકુમાર, પ.ભ. કેયુરકુમાર તથા ગં.સ્વા. શારદાબેન ચુનિલાલ પટેલ તથા પ.ભ. દીપેશકુમાર ચુનીભાઈ પટેલ પરિવાર)

માંગલિક પ્રસંગો

પારાયણ જ્ઞાનયજ્ઞ : શ્રીમદ્ સત્સંગિભૂષણ સપ્તાહ પારાયણ જ્ઞાનયજ્ઞના વક્તાપદે સંત વિદ્વાન સ.ગુ. શાસ્ત્રી સ્વામી નિર્ગુણદાસજી (વેદાન્તાચાર્ય, સાંખ્યયોગાચાર્ય, મહંત સ્વામી અમદાવાદ તથા શ્રી સહજાનંદ ગુરુકુળ અસારવા સંચાલકશ્રી) બિરાજી કથામૃતનું રસ પાન કરાવશે.
પ્રારંભ તા. ૨/૪/૨૦૦૪ પૂર્ણાહુતિ તા. ૮/૪/૨૦૦૪
સમય : દરરોજ પ્રથમ સત્ર : સવારે ૯-૦૦ થી ૧૨-૦૦ દ્વિતીય સત્ર બપોરે ૩-૩૦ થી ૬-૩૦

મહાવિષ્ણુયાગ : "૧૦૮" કુંડી મહાહરિયજ્ઞના આચાર્ય પદે મથુરાવાસી, વેદપુરુષ શાસ્ત્રીશ્રી વાસુદેવકૃષ્ણ ચતુર્વેદીજી રહેશે.
પ્રારંભ : તા. ૬/૪/૨૦૦૪ સમય ૮-૦૦ કલાકે પૂર્ણાહુતિ : ૮/૪/૨૦૦૪

વિપ્ર બટુકોને યજ્ઞોપવિત : તા. ૬/૪/૨૦૦૪ સવારે : ૯-૦૦ કલાકે

સંત મહાદીક્ષા : તા. ૬/૪/૨૦૦૪

સમૂહ મહાપૂજા : (મહોત્સવ કથા મંડપમાં) તા. ૭/૪/૨૦૦૪ સવારે : ૭-૦૦ થી ૯-૦૦ કલાકે

યજમાનોનું સન્માન : તા. ૭/૪/૨૦૦૪ બપોરે : ૧૧-૦૦ કલાકે

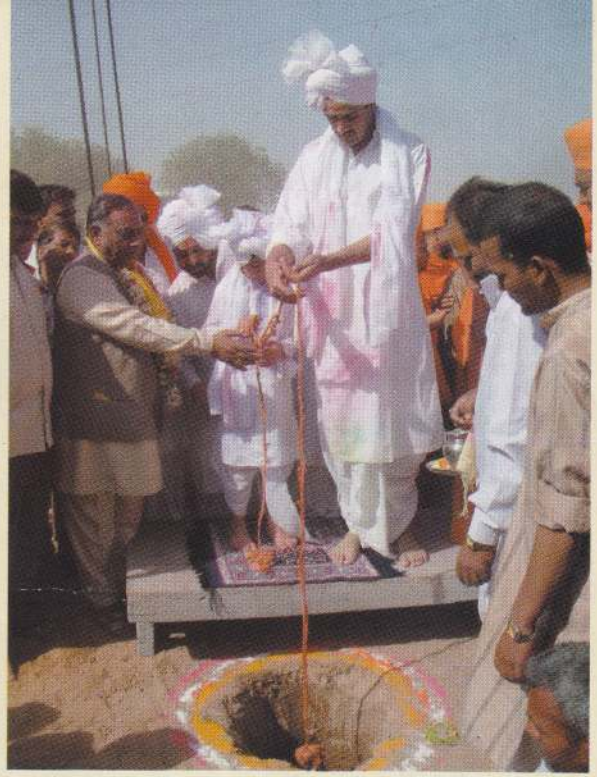
શોભાયાત્રા : તા. ૭/૪/૨૦૦૪ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુરથી મહોત્સવ સ્થળ પર પ્રારંભ : સમય : બપોરે ૩-૦૦ કલાકથી

તા. ૮/૪/૨૦૦૪
શ્રી નરનારાયણદેવનો મહાભિષેક : મંદિરે સવારે : ૬-૦૦ થી ૭-૦૦ કલાકે
અન્નકૂટ : સવારે : ૮-૩૦ કલાકે ● યજ્ઞની પૂર્ણાહુતિ : સવારે ૯-૩૦૦ કલાકે ● પારાયની પૂર્ણાહુતિ : સવારે ૧૦-૩૦ કલાકે
પ.પૂ. મહારાજશ્રીનો પ્રાકટ્યોત્સવ : બપોરે : ૧૧-૧૫ કલાકે
પ્લેટીનમ તુલાવિધિ : બપોરે ૧૧-૩૦ કલાકે
પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના આશીર્વચન : બપોરે ૧૨-૦૦ કલાકે

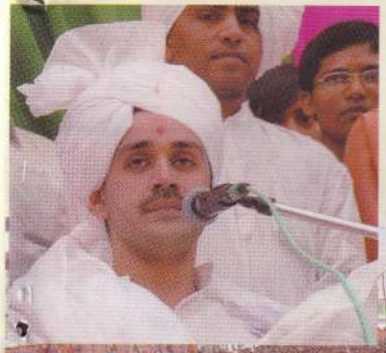




श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा से नीकली विजय स्थंभ शोभायात्रा में वंदनीय संतो के साथ प. पू. लालजी महाराज के दर्शन करने हजारो की संख्या में उमटी जन मेदनी



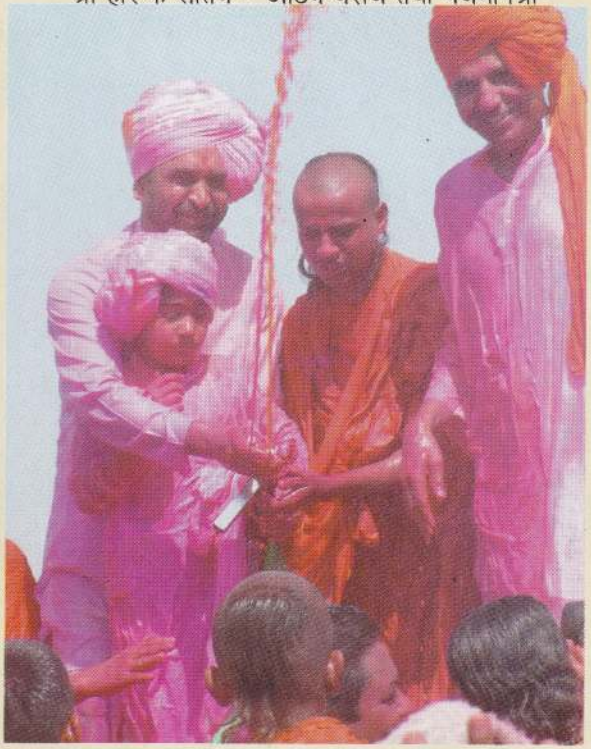
महोत्सव के स्थल पर विजय स्थंभ की स्थापना विधि करते श्री हरि के सातवे - आठवे वंशज तथा यजमानश्री







महोत्सव के स्थल पर प्रासंगिक सभा में आशीर्वचन देते हुए पू. लालजी महाराज तथा छंद बोल कर सभा को स्तब्ध करते हुए बाल लालजी महाराज



जारो हरिभक्तोको रंगोत्सव के दौरान रंग प्रसादी फेकते हुवे पू. बाल लालजी महाराज ।

SHRI SWAMINARAYAN REG. NO. GUJ.581



"फूल फूल में सत्संग है। पत्ता पत्ता श्री हरि की इच्छा से खील रहा है। परंतु हमे तो कांटे कांटे का सत्संग करना है। सर्ववतारी श्री हरि हमे शक्ति दे।"

दी. २-४-२००४ से ८-४-२००४

पू.पू.धर्मधुरंधर आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीनो षष्ठीपूर्ति महोत्सव

ता. २/४/२००४ थी ता. ८/४/२००४

"JAY SHREE SWAMINARAYAN" NOW TELECAST ON ZEE TV

EVERY SUNDAY U.S.A. 10:00 am (EST) & 8:00 am U.K. (EST)

Praful Kharsani